सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
वशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस डालर

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

फरवरी, 2012 वर्ष 10 अंक 12

दुरूद व सलाम

दुरूद उस पर कि रब है भेजता जिस पर दुरूद
दुरूद उस पर फिरिश्ते भेजते जिस पर दुरूद
दुरूद उस पर कि जिस पर हुक्म है भेजो दुरूद
उसी महबूब पर या रब मेरे लाखों दुरूद
सलाम उस पर कि जिस पर हुक्म है भेजो सलाम
सलाम उस पर कि जिसके नाम पर लाज़िम सलाम
नमाज़ों में हुआ जिस ज़ात पर वाजिब सलाम
उसी सरताजे रहमत पर मेरे लाखों सलाम

इदारा

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 727527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
ज़िक्रे सीरतुन्नवी सल्ल0	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
आदर्श शासक	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	10
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	11
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी	21
बहादुर शाह ज़फर	अब्दुर्रहमान खान	23
ज़िक्रे मीलादुन्नबी	फ़ौज़िया सिद्दीक़ा	26
पवित्र कुर्आन और मुहम्मद सल्ल0	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	32
भ्रष्टाचार उन्मूलन कैसे		35
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूरः-ए-बक़रः

अनुवादः आया है तुम्हारे पास रसूल (सन्देष्टा) तुममें का[1], भारी है उस पर जो तुमको तकलीफ पहुँचे[2], आकांक्षी है तुम्हारी भलाई पर[3], ईमान वालों (मुसलमानों) के ऊपर बड़ा ही स्नेही और मेहरबान है[4](128)। फिर भी यदि मुँह फेरें तो कह दे कि काफी है मुझको अल्लाह, किसी की बन्दगी नहीं उसके सिवा, उसी पर मैंने भरोसा किया और वही मालिक है अर्शे अज़ीम (उच्चतम सिंहासन) का[5](129)।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. जिसके वंश, चरित्र, आदत, ईमानदारी और अमानतदारी से तुम खूब परिचित हो।

2. जिस चीज़ से तुमको दुख या परेशानी पहुँचे वह उन पर भारी है, हर मुमकिन तरीक़े से आप यही चाहते हैं कि उम्मत पर आसानी हो और लोक–परलोक (दुनिया व आखिरत) के अज़ाब (दण्ड) से सुरक्षित रहे। इसलिए जो दीन (धर्म) आप लाए वह भी आसान और नरम है। और लोगों को आप ये उपदेश दिया करते थे कि आसानी करो सख़्ती मत करो।

3. अर्थात तुम्हारी ख़ैरख़्वाही (शुभचिन्ता) और तुम्हें लाभ पहुँचाने की खास तड़प उनके दिल में है, लोग नर्क (दोज़ख) की ओर भागते हैं। आप उनकी कमर पकड़– पकड़ कर उधर से हटाते हैं, आपका बड़ा प्रयास और हार्दिक इच्छा यही थी कि अल्लाह के बन्दे असली भलाई और वास्तविक सफलता से आलिंगन बद्ध हों। जिहाद आदि का उद्देश्य भी रक्तपात नहीं बल्कि मजबूरी की हालत में सख्त आप्रेशन के द्वारा मानव जाति के नासूर बन चुके और ख़राब हो चुके अंगों को काट कर तथा खतरनाक कीटाणुओं को खत्म कर उम्मत के सामान्य स्वभाव को स्वस्थता प्रदान करना है।

4. जब आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम सारे जहाँ के शुभचिन्तक हैं तो अल्लाह पर आस्था (ईमान) रखने वालों के हाल पर ज़ाहिर है कि कितना मेहरबान होंगे।

5. यदि आपकी दया, शुभचिन्ता और उम्मत के लिए दिन–रात तड़पने की लोग क़द्र न करें तो कुछ परवाह नहीं। यदि पूरी दुनिया आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से मुँह फेर ले तो अकेले अल्लाह आपके लिए काफी है, जिसके अतिरिक्त न कोई पूज्यनीय है और न किसी पर भरोसा किया जा सकता है, क्योंकि ज़मीन व आसमान की सल्तनत और "अर्शे अज़ीम (तख्ते शहंशाही) का मालिक वही है। सभी प्रकार का लाभ– हानि, पथ प्रदर्शन (हिदायत) और पथ भ्रष्टता (ज़लालत) उसी के हाथ में है।

अबूदाऊद नामक हदीस के ग्रन्थ में, हज़रत अबूदरदा रज़ि0 से रिवायत है कि जो आदमी सुबह–शाह सात–सात बार "हसबियल्लाहु लाइलाह इल्लाहु व अलैहि तवक्कल्तु व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम" पढ़ा करे ख़ुदा उसके हर ग़म को दूर कर देगा। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) से मुहब्बत

—नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

पवित्र कुर्आन में है-

"आप कह दीजिए कि यदि तुम्हारे पिता और तुम्हार बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे परिवार और वह माल जो तुमने कमाए हैं और वह व्यापार जिसके बिगड़ जाने से तुम डर रहे हो, और वह घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो ये सब तुमको अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से और उसके रास्ते में जिहाद करने से अधिक प्रिय हो तो तुम प्रतीक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह अपना आदेश भेज दे।

(सूरः तौबा—24)

ऐ ईमान वालो! तुमसे कोई अपने दीन से फिर जाए। अतः अल्लाह शीघ्र ही ऐसे लोगों को अस्तित्व में ले आएगा जिन्हें वह चाहता होगा और वो उसे चाहते होंगे। (सूरः माइदा—54)

और जो ईमान वाले हैं, वो तो अल्लाह की मुहब्बत सबसे ऊपर रखते हैं।

(सूरः बकरः 165)

ईमान की लज़्ज़त के लिए तीन चीज़ें ज़रूरी हैं-

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का कथन है कि जिस व्यक्ति के अन्दर तीन बातें हों उसको ईमान की लज़्ज़त महसूस होगी:—

1. अल्लाह और उसके रसूल से अधिक कोई प्रिय न हो।
2 वह किसी से प्रेम करे तो अल्लाह के लिए करे।
3. वह कुफ्र (नकार) की ओर लौटना उतना ही नापसन्द करे जितना आग में जल जाने को नापसन्द करता है।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की मुहब्बत सब पर भारी होनी चाहिए-

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि तुम में कोई आदमी उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक मेरी मुहब्बत घर वालों, धन—सम्पत्ति और समस्त लोगों के प्रेम पर भारी न हो जाए। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा कि तुम में से कोई व्यक्ति उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके पिता, संतान और समस्त लोगों से अधिक उसको प्रिय न हो जाऊँ। (बुखारी)

जो जिससे मुहब्बत करेगा उसका हश्र उसी के साथ होगा-

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि एक देहाती ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से पूछा, कियामत कब आएगी? हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने पूछा, तुमने उसके लिए क्या तैयारी की है? उसने कहा, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0। आप सल्ल0 ने कहा, तुम जिससे प्रेम करते हो उसी के साथ होगे। इस पर हज़रत अनस रज़ि0 ने कहा, मैं अल्लाह और उसके रसूल से प्रेम करता हूँ, अबूबक्र रज़ि0 और उमर रज़ि0 से मुहब्बत करता हूँ, मुझे (अल्लाह से) आशा है कि उन लोगों के साथ हूँगा चाहे उनके जैसा काम न कर सकूँ। (मुस्लिम)

एक और रिवायत में है कि

शेष पृष्ट.....34 पर

ज़िक्रे सीरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अशरफ़ुल मख़लूक़ात, ख़ैरुल बशर, सय्यिदुल अंबिया व रुसुल, महबूबे रब्बिल आलमीन, खातमन्नबिय्यीन, शफ़ीउल मुज़नबीन, आकाए नामदार सरवरे दो आलम हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (सल्ल0) 9 रबीउल अव्वल को इस दुनिया में तशरीफ़ लाए अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिंव व बारिक वसल्लिम। आपकी वालिदा माजिदा का नाम आमिना था, वालिद साहब का नाम अब्दुल्लाह था, दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब और एक चचा का नाम अबू तालिब था। जब आप माँ के पेट में थे तो आपके वालिद साहब का इन्तिक़ाल हो चुका था और आप यतीम पैदा हुए। सऊदी अरब के इलाके हिजाज़े मुकद्दस के शहर मक्का मुकर्रमा में आप की पैदाइश हुई, इसलिए मक्का मुकर्रमा आपका मौलिद (जन्म स्थान) कहलाता है। वहाँ के उस वक्त के रवाज के मुताबिक वहाँ के देहात की एक खुशनसीब दाई हलीमा आप को दूध पिलाने के लिए ले गई। दाई हलीमा ने आप की खुली हुई बरकतें देखीं, जब दूध पिलाने का ज़माना खत्म हुआ तो आपकी माँ बीबी आमिना के पास वापस लाईं और दस्तूर के मुताबिक इनआम व इकराम लिया। लेकिन आपकी बरकात देख कर बीबी आमिना से दरख़्वास्त की कि अभी आप को कुछ दिन मेरे पास रहने दिया जाए, वह राज़ी हो गई और आप दाई हलीमा के घर फिर आ गये यहाँ तक की आप चलने—फ़िरने लगे और अपने दूध शरीक भाईयों के साथ बकरियाँ चराने जाने लगे, लेकिन इस दौरान कुछ अजीब व गरीब वाक़िआत जाहिर हुए और दाई हलीमा घबरा कर आपको हज़रत आमिना के पास पहुँचा गई। अब आप अपनी वालिदा मुहतरमा के साथ रहने लगे। जब आप 6 साल के हुए तो अल्लाह तआला ने माँ को भी उठा लिया और अब आप माँ—बाप, दोनों तरफ से यतीम (अनाथ) हो गये। अब आप दादा अब्दुल मुत्तलिब की देख—रेख में रहने लगे। जब आप दस साल के हुए तो दादा को भी अल्लाह ने उठा लिया, अब आप अपने एक चचा अबू तालिब के साथ रहने लगे, यहाँ तक कि आप जवान हो गये, और खुद अपनी मेहनत से अपना गुज़र करने लगे। मक्के की एक मालदार औरत खदीजा रज़ि0 लोगों को अपना पैसा देकर तिजारत करवाँती थीं, वह बेवा थीं। वह बड़ी अच्छी सिहत की थीं, उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को भी माल देकर तिजारत के लिए दूसरे मुल्क भेजा, इस तिजारत में बहुत नफा हुआ, इस तिजारती सफ़र में हज़रत खदीजा के गुलाम ने जो अजीब बातें देखीं, हज़रत खदीजा से बयान कीं, हज़रत खदीजा आपसे बहुत ज़्यादा मुतअस्सिर हुई, हज़रत खदीजा को कई मालदारों ने निकाह का पैग़ाम दिया था, मगर उन्होंने इन्कार कर दिया था लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को उन्होंने खुद निकाह का पैगाम दिया, उस वक्त हज़रत खदीजा 40 साल की थीं। जब कि हमारे हुज़ूर सल्ल0 25 साल के थे और सिहत व खूबसूरती में कोई भी उन जैसा न था, आपने पैगाम क़बूल

किया और निकाह हो गया।

हज़रत खदीजा से आपकी सात औलादें हुईं, चार बेटियां और तीन बेटे, हज़रत जैनब, हज़रत रुक़य्या, हज़रत उम्मे कुल्सूम और हज़रत फ़ातिमा। बेटों में हज़रत क़ासिम रज़ि0, इन्हीं के नाम के सबब हुज़ूर सल्ल0 को अबुल कासिम कहा जाता है, दूसरे बेटे हज़रत ताहिर और तीसरे हज़रत तय्यिब हैं, अल्लाह इन सब से राज़ी हुआ। आपके एक बेटे इब्राहीम थे, यह उम्मुल मोमिनीन हज़रत मारिया से थे, जब आप 40 साल के हुए तो आप पर हज़रत जिब्रील अ0 के वास्ते से "वही" आना शुरु हुई, यानी आप पर कुर्आन नाजिल होना शुरु हुआ, और आपको हुक्म हुआ कि लोगों को अल्लाह का पैगाम पहुँचाएं। जब आपने फ़रमाया कि लाइलाह इल्लल्लाह कहो, कामियाब हो जाओगो यानी आखिरत में कामियाबी के लिए कहो, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, तो मक्के के लोग जो सैकड़ों बुतों की इबादत करते थे आपके मुखालिफ़ हो गये, और आप को तरह–तरह सताने लगे। लेकिन नेक रूहों वाले लोग आप पर ईमान भी लाने लगे, ईमान लाने वालों में औरतों में हज़रत खदीजा, मर्दों में हज़रत अबूबक्र, लड़कों में हज़रत अली और ग़ुलामों में हज़रत ज़ैद रज़ि0 सबसे पहले ईमान लाए। फिर तो ईमान लाने वालों का ताँता बन्ध गया। उधर मक्के के दौलत व असर वाले जो ईमान न लाये थे एक तरफ हमारे हुज़ूर को सताते थे तो दूसरी जानिब ईमान लाने वालों को भी बुरी तरह सताते। उधर कुर्आन उतरता रहा, ईमान वाले बढ़ते रहे तो साथ ही काफिरों का सताना भी बढ़ता रहा। यहाँ तक कि बहुत से लोग अल्लाह के रसूल सल्ल0 के हुक्म से हब्शा हिजरत कर गये, इधर इस्लाम बढ़ता रहा उधर काफ़िरों का जुल्म भी बढ़ता रहा यहाँ तक कि हमारे हुज़ूर सल्ल0 के क़त्ल का मंसूबा बन गया तो अल्लाह के हुक्म से हमारे हुज़ूर सल्ल0 मक्के से मदीना इस हाल में निकले कि काफिर आप का घर कत्ल की गरज से घेरे हुए थे। लेकिन आपको कोई देख न सका। वह एक खुला हुआ मोजिज़ा था। यह उस वक्त की बात है जब आप की नुबूव्वत के 13 साल हो चुके थे, यानी आप 53 साल के थे, इस हिसाब से यह 622 ई0 निकलता है। अब आप उम्र के पच्चासवें साल में थे तो उस साल आपकी चहीती बीवी उम्मुल मोमिनीन हज़रत खदीजा रज़ि0 का इन्तिकाल हो चुका था। इसी साल अपके बड़े हमदर्द और आप का साथ देने वाले कुरैश के सरदार आपके चचा हज़रत अबू तालिब का भी इन्तिकाल हुआ था। और बड़े अफसोस की बात यह हुई कि वह आपके हमदर्द होते हुए भी ईमान न ला सके थे।

मदीना मुनव्वरा पहुँच कर इस्लाम बड़े जोर शोर से फैलना शुरु हुआ, मक्के वाले एड़ी चोटी का ज़ोर लगा कर इस्लाम की मुखालिफत करते रहे, कई लड़ाइयाँ हुई मगर इस्लाम फैलता रहा, कुर्आन उतरता रहा। इस्लाम और मुसलमानों को अल्लाह ने ऐसी ताक़त दी कि मदीना पहुँचने के आठवें साल यानी सन् 8 हिज्री में हमारे हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपने दस हज़ार जांनिसार सहाबा के साथ मक्के में दाखिल हुए, मक्के वालों ने इताअत कबूल करली और इस्लाम ले आए, काबे से बुत निकाल फेके गये, यह फत्हे मक्का का वाक़िआ कहलाता है, अब इस्लाम के मुख़ालिफीन

शेष पृष्ट.....39 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

दूसरी बैअते अक़बा-

हज़रत मुसअब की तअलीम से यसरिब के घर–घर में इस्लाम का चर्चा होने लगा और उसका नतीजा यह हुआ कि अगले साल 73 मर्द और 2 औरतों पर सम्मिलित एक प्रतिनिधि मंडल मक्का आया, और मुक़ामे अक़बा पर देर रात में जमा हुआ और आप सल्ल0 के मुबारक हाथों पर इस्लाम की बैअत की, और इसके साथ आप सल्ल0 से यह मुतालिबा भी किया कि अब यसरिब (मदीना) में मुसलमानों की तादाद क़ाबिले इत्मिनान हद तक हो गई है, अब आप मक्का से हिज़रत फ़रमा कर यसरिब आ जाएं, और उसको अपनी दअवत व तबलीग़ का मर्कज़ बनाएं, आप सल्ल0 के चचा हज़रत अब्बास भी उस वक़्त इस्लाम नहीं लाए थे, उस मौक़े पर हाज़िरे खिदमत थे, उन्होंने अन्सार से यह बात सुन कर उनसे खिताब करके कहा कि ऐ ख़ज़रज के लोगो! अगर तुम मुहम्मद सल्ल0 और उनके साथियों का हमेशा दुश्मनों के मुक़ाबले में साथ दे सकते हो और हर मौक़े पर आप सल्ल0 की हिफ़ाज़त का वादा करते हो, अगर तुम मरते दम तक उनका साथ दे सकते हो तो ठीक है, वरना अभी से जवाब दे दो, अन्सार की तरफ से जवाब मिला, हम लोग तलवारों की गोद में पले हैं, हमें मालूम है कि हम किस चीज़ पर बैअत कर रहे हैं, और यह भी जानते हैं कि आप की बैअत दर हक़ीक़त अरब व अजम और जिन् व इन्सान से जंग है, अब्बास बिन उबादा ने कहा कि अगर हुज़ूर सल्ल0 की इजाज़त हो तो हम कल ही मक्का वालों को अपनी तलवार का ज़ोर दिखा दें, आप सल्ल0 ने फ़रमाया : नहीं, मुझे जंग की इजाज़त नहीं, उसके बाद नबी सल्ल0 ने अन्सार में से 12 लोगों को चुना, यह सबके सब अपने क़बीले के बड़े ज़िम्मेदार लोग थे[1]।

मदीने में इस्लाम को पनाह हासिल हुई तो आंहज़रत सल्ल0 ने सहाबा को इजाज़त दी कि मक्का से हिज़रत कर जाएं, कुरैश को जैसे ही उसकी भनक लगी तो उन्होंने रोक–टोक शुरु कर दी, लेकिन चोरी छुपे सहाबा–ए–कराम हिज़रत करते रहे, और धीरे–धीरे उनकी एक बड़ी तादाद मदीना पहुंच गई, मक्का में सिर्फ़ आंहज़रत सल्ल0, हज़रत अबूबक्र, और हज़रत अली और वह लोग जो मुफ़लिसी की वजह से हिज़रत पर क़ुदरत न रखते थे बाक़ी रह गए।

हिज़रत करने वालों को हिज़रत करते वक़्त कुरैशे मक्का की सख़्त मुख़ालिफ़तों और रुकावटों का सामना करना पड़ा, कुरैश ने हज़रत सुहैब रूमी रज़ि0 का सारा माल व मता छीन लिया[2]।

हज़रत उम्मे सलमा की हिज़रत-

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि यल्लाहु अन्हा अपने बारे में रिवायत करती हैं कि जब अबू सलमा रज़ि0 ने मदीना की हिज़रत का पक्का इरादा कर लिया तो सफ़र के लिए अपना

1. सीरते इब्ने हिशाम 1/441–444
2. सीरते इब्ने हिशाम 1/447 दलाइलुल नुबूवा, बैहिक़ी 2/–522

ऊँट तैयार किया, मुझको उस पर सवार कराया और मेरे लड़के सलमा बिन अबी सलमा को मेरी गोद में दे दिया, फिर ऊँट की नकेल हाथ में ली और रवाना हुए, जब मेरे शौहर के ख़ानदान बनी मुग़ैरह के कुछ लोगों की नज़र उन पर पड़ी तो वह उनके पास आए और कहने लगे कि तुम्हारी हद तक ठीक है, तुम अपने को बचा कर जा रहे हो, इन बीवी को हम तुम्हारे साथ जाने के लिए कैसे छोड़ सकते हैं, यह कह कर उन्होंने ऊँट की नकेल उनके हाथ से छीन ली और मुझे अपने साथ ले गए, यह देख कर बनू अब्दुल असद में जो अबू सलमा के हिमायती थे भड़क उठे, उन्होंने कहा कि खुदा की क़सम तुमने इनको हमारे भाई से छीन लिया है, लेकिन हम अपने लड़के को अब इनके पास हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे, इसके बाद दोनों में मेरे बच्चे पर कशाकश शुरु हो गई और दोनों उसको अपनी तरफ़ खींचने लगे, यहां तक कि उसका हाथ उखड़ गया, मेरे ससुराली बनू अब्दुल असद उसको छीन लेने में कामयाब हो गए और उसको अपने साथ ले गए, बनू मुग़ैरह ने मुझे अपनी क़ैद में कर लिया, मेरे शौहर मदीना रवाना हो चुके थे, इस तरह मेरा लड़का मेरे शौहर और मैं, तीनों एक दूसरे से जुदा हो गए।

मैं हर सुबह को बाहर आती और "अब्तह" में बैठ जाती और शाम तक रोती रहती, इस पर पूरा एक साल गुज़र गया, एक दिन बनू मुग़ैरह ही में से मेरे चचाज़ाद भाइयों में से एक भाई की मुझ पर नज़र पड़ी और मेरी इस हालत को देख कर उसे रहम आया और उसने बनू मुग़ैरह से कहा कि इस गरीब को क्यों नहीं छोड़ देते, तुमने इसको शौहर और बेटे दोनों से महरूम कर दिया है? वह कहने लगे अगर तुम्हारा दिल चाहे तो अपने शौहर के पास चली जाओ, उस वक़्त बून अब्दुल असद ने मेरा लड़का मुझे वापस किया, मैंने अपना ऊँट तैयार किया, बच्चे को गोद में लिया और मदीने में अपने शौहर की तलाश के लिए चल खड़ी हुई, इस हालत में कि अल्लाह का कोई बन्दा मेरे साथ न था, जब मैं "तनइम" (जो मक्के से तीन किलोमीटर के फासले पर है) तक पहुंची तो मेरी मुलाक़ात एक पड़ोसी उस्मान बिन तलहा रज़ि0 से हो गई, जो बनी अब्दुलदार में से थे, वह देखते ही बोले, ऐ अबू उमय्या की लड़की! तुम कहां जा रही हो? मैंने कहा मदीने में अपने शौहर के पास जाना चाहती हूं। उन्होंने कहा तुम्हारे साथ कोई है? मैंने जवाब दिया मेरे साथ अल्लाह के सिवा और इस बच्चे के अलावा और कोई नहीं है, कहने लगेः खुदा की क़सम तुम्हें (बग़ैर किसी की मदद के) मन्ज़िल पर पहुंचना आसान नहीं है, उन्होंने ऊँट की नकेल अपने हाथ में लेली और मुझे लेकर आगे रवाना हुए, खुदा की क़सम जिन लोगों से अब तक मेरा वास्ता पड़ा है मैंने किसी को भी उनसे ज़्यादा शरीफ और करीमुन्नफ़्स (दयालू) नहीं पाया, जब कोई मन्ज़िल आती और रुकना पड़ता तो वह ऊँट को बिठा कर अलाहिदा हट जाते, जब मैं उतर आती तो ऊँट के पास आकर सामान उतारते फिर एक दरख़्त से बांधते फिर किसी दरख़्त के साये में लेट जाते, जब शाम होती और रवानगी का वक़्त आता तो उठते, ऊँट को तैयार करते सामान वग़ैरह उसके ऊपर लादते फिर वहां से कुछ दूर हट जाते और

मुझसे कहते कि बैठ जाओ, जब मैं अच्छी तरह बैठ जाती तो आकर उसकी नकेल थाम लेते और इसी तरह दूसरी मन्ज़िल तक पहुंचते, इसी तरह करते हुए उन्होंने मुझे मदीना पहुंचाया, जब उनकी नज़र बनी उमर बिन औफ़ के गांव "कुबा" पर पड़ी तो मुझसे कहने लगे कि तुम्हारे शौहर इसी गांव में हैं (अबू सलमा यहीं मुक़ीम थे) अब तुम अल्लाह का नाम लेकर वहां चली जाओ, यह कह कर उन्होंने मुझे रुख़सत कर दिया और मक्का के लिए वापस रवाना हो गए[1]।

वह कहती थीं कि इस्लाम में किसी घराने को वह तकलीफ़ें नहीं उठानी पड़ीं जो अबू सलमा रज़ि0 के घर वालों ने उठाई हैं, और मैंने किसी इन्सान को उस्मान बिन तल्हा रज़ि0 से ज़्यादा शरीफ और हौसलामन्द नहीं पाया।

अबू सलमा को हिज़रत की ख़ातिर अपनी बीवी और बच्चे से महरूम होने से साबिक़ा पड़ा और उनकी बीवी को अपने शौहर के छूटने और बच्चे के छीने जाने से साबिक़ा पड़ा और दोनों ने बरदाश्त किया, ऐसी ही मुश्किलात का सामना तक़रीबन हर एक सहाबी को करना पड़ा था।

क़त्ल की साजिश- जब मक्का में मुसलमान गिनती के रह गए, मशहूर सहाबा में से सिर्फ़ हज़रत अबूबक्र और हज़रत अली रज़ि0 थे, तो कुरैशे मक्का ने कहा कि अब मुहम्मद को क़त्ल कर देना ही हल (समाधान) है, क़त्ल की स्कीम पर ग़ौर करने के लिए "दारुन्नदवा" के कुफ़्फार का एक ख़ुफ़िया इजलास (गुप्त अधिवेशन) हुआ, तरह–तरह की स्कीमें बहस में आईं, आखिर अबूजहल की तदबीर पर सबका इत्तिफ़ाक़ हुआ, तजवीज़ और तदबीर (प्रस्ताव और उपाय) निम्नलिखित थीं:

"अरब के हर एक मशहूर क़बीले से एक–एक जवां मर्द का इन्तिख़ाब किया जाए, यह सब बहादुर रात के अंधेरे में मुहम्मद के घर का घेराव करलें, और जैसे ही वह सुबह की नमाज़ के लिए निकलें, यह सब के सब हल्ला बोल कर अपनी अपनी तलवार से उनपर वार करें, इस तदबीर का फायदा यह होगा कि आपका खून कुरैश की सब शाखों पर तक़सीम हो जाएगा, और मुहम्मद का खानदान उसके साथी उसके खून का बदला लेने पर क़ादिर न होंगे अर्थात सक्षम न होंगे, इस तरीक़े से एक भयानक शर (उपद्रव) सफह–ए–हस्ती (भू–स्तर) से हमेशा के लिए मिट जायेगा"[2]।

1. सीरते इब्ने हिशाम 1/467, अस्सीरतुन नबविया, इमाम ज़हबी 1/312

2. सीरते इब्ने हिशाम 1/480–482, तारीख़े तबरी 2/371–372, तब्क़ात इब्ने सअ़द 1/227, निहायतुल अरब, 16/327, उयूनुल असर 1/179–187

❑❑

मीलादुन्नबी

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हर ज़िक्र बा बरकत है, ज़िक्र मीलाद भी बा बरकत है, लेकिन मीलाद में पैदाइश की ख़ास तर्ज़ से कुछ रिवायत का पढ़ना, फिर खड़े हो कर सलाम पढ़ने को ज़रूरी समझना बिदअ़त है इससे बचना चाहिए।

नोटः इस अंक में कहीं–कहीं सल्ल0 छप गया है उसके लिए हम क्षमा चाहते हैं। हम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखते हैं।

सम्पादक

आदर्श शासक

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

न्याय शासन की सबसे ऊँची नीति है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने अनुयायियों को यह सिखाया ही नहीं बल्कि स्वयं उस पर अमल भी किया। उसकी एक बानगी तो देखिए। जुहर का समय है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद को आते हैं और मिम्बर (व्याख्यान स्थल) पर विराजते हैं। आपके चचेरे भाई भी साथ थे। ये रबीउलअव्वल सन् 11 हिजरी की बात है। ये उन दिनों की बात है जब अनुपम आदर्श, जगनायक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से पर्दा करने वाले थे और आपकी तबीयत बड़ी ख़राब थी। तेज बुखार की हालत में ही आप मस्जिद आए और मिम्बर पर बैठ गए। फिर अपने चचेरे भाई को आदेश दिया कि मुसलमानों को जमा करो। जब सहाबा की एक बड़ी संख्या इकट्ठा हो गई तो अल्लाह के रसूल ने उनके सामने व्याख्यान दिया। ये एक ऐसा व्याख्यान था जिसको सुनकर सहचरों के दिल भर आए।

इस अवसर का वर्णन करते हुए चचेरे भाई कहते हैं कि उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर में बहुत दर्द था। एक जर्द पट्टी मैंने आपके सर पर बांध दी थी। आप मेरे ही बाजू पर टेक लगा कर मस्जिद में दाखिल हुए थे। इसी दर्द की हालत में आपने व्याख्यान दिया। सर्व प्रथम तो अल्लाह की प्रशंसा की और फिर कहा मेरा तुम लोगों से विदा लेने का समय निकट आ गया है। इसलिए चाहता हूँ कि तुम लोगों से कहूं कि जिस किसी को मुझसे किसी प्रकार का बदला लेना हो तो ले ले। यदि मैंने किसी की कमर पर मारा है तो ये मेरी कमर हाज़िर है। यदि मैंने किसी को बुरा–भला कहा है कि तो वो आए और मुझे सख्त सुस्त कह ले। जिसका कोई बक़ाया है वह मुझसे ले ले। और कोई भी ये न सोचे कि बदला लेने से मेरे दिल में कोई बुरा ख्याल आएगा। अल्लाह का शुक्र है कि मैं ईर्ष्या और द्वेष से सुरक्षित हूँ। इसलिए खूब समझ लो, ये मेरी हार्दिक इच्छा है कि जिसका भी मुझ पर कोई हक़ बनता हो वो अपना हक़ मुझ से लेले या मुझे क्षमा करदे ताकि मैं अपने रब के पास सुकून से जाऊँ। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ये कहने के उपरान्त प्रतीक्षा करते रहे कि कोई कुछ कहे, कोई आगे बढ़ कर बदला ले, मगर किसी ने कुछ न कहा न कोई आगे बढ़ा। और कोई कहता भी क्या। करूणा सागर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी पर ज़्यादती की ही नहीं थी।

कुछ देर ठहर कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि ये एक ऐलान इस बात के लिए प्रयाप्त नहीं है मैं फिर ऐलान करुँगा।

उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुहर की नमाज़ अदा की और फिर दोबारा मिम्बर पर बैठे और कहा, तुम में से कोई भी बदला लेने में तनिक भी न झिझके।

पवित्र कुर्आन में है:– "ऐ ईमान वालो! मज़बूती से न्याय

शेष पृष्ट.....25 पर

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियाँ

—हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों में से दो का आपकी मुबारक ज़िन्दगी में ही इन्तिक़ाल हो गया था। वह भी मुसलमानों के लिए बीवी के इन्तिक़ाल की सूरत पेश आने पर नमूना बना। आपकी सबसे पहली जौज–ए–मुतह्हरा उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ि0 जो आपकी ज़िन्दगी के 25 साल तक आपकी तन्हा अहलिया थीं और बहुत उन्स और आपसी मुहब्बत का तअल्लुक़ रख़ती थीं। 25 साल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रह कर मक्की ज़िन्दगी के क़याम में ही आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जुदा हो गई थीं। फिर आप ससल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदनी ज़िन्दगी में हज़रत ज़ैनब बिन्त ख़ुज़ैमा उम्मुल मसाकीन रज़ि0 आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जुदा हुई। बाक़ी अज़वाज मुतह्हरात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बेवह हुई और उन्होंने बेवह होने पर मुसलमान ख़ातून का जो उसवा (आदर्श) होना चाहिए उसका नमूना पेश किया और शायद इसी लिए उनके किसी दूसरे से निकाह करने की इजाज़त नहीं दी गयी थी कि आपसे हासिल किये हुए तौर तरीक़े और अख़लाक़ में दूसरे से हासिल किये हुए अख़लाक़ की मिलावट न हो जाए। क़ुर्आन मजीद में यह हुक्म आया कि मुसलमानों के लिए यह सही नहीं है कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजह मुतह्हरा से निकाह करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद ज़िन्दा रहने वाली पाक बीवियों के नाम निम्नलिखित हैं:–

हज़रत आइशा, हज़रत हफ़सा, हज़रत सौदा, हज़रत उम्मे सलमा, हज़रत ज़ैनब, हज़रत जुवैरिया, हज़रत उम्मे हबीबा, हज़रत मैमूना, हज़रत सफ़ीया रज़ी0

कई बीवियों की हिकमत व मसलहत- इस्लाम से पहले और इस्लाम के अलावा दूसरे निज़ामे ज़िन्दगी में अपनी–अपनी मर्ज़ी के मुताबिक कई बीवियाँ रखने का रिवाज रहा है। इस्लाम ने आकर उनकी संख्या पर पाबन्दी लगाई और एक से ज़्यादा बीवी करने की ज़रूरत पड़ने पर इसकी इजाज़त दी है लेकिन इसको बराबरी और इंसाफ की शर्त के साथ बांधते हुए चार तक सीमित कर दिया है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 25 साल की उम्र होने पर जो नबूवत मिलने से 15 साल पहले थी, निकाह किया और उसी पर कायम रहे और जब आपकी उन बीवी का इन्तिक़ाल हो गया और ज़रूरत पड़ी तो उन्हीं की तरह एक दूसरी बेवह ख़ातून से निकाह किया। इस तरह नबूवत के 13 साल बाद जबकि आपकी उम्र 53 साल से ज़्यादा हो गई थी और नबूवत के सामाजिक व इन्तिज़ामी मामलात के तकाज़ों की वजह से मुख़तलिफ़ जगहों और तरह–तरह के लोगों से आपको सम्बन्ध स्थापित करना पड़ रहे थे, जो इस्लाम के प्रचार और इस्लाम के इन्तिज़ामी मामलात और उसके तहत सामाजिक ताल्लुक़ात के

सिलसिले में ज़रूरी थे, तो ऐसी ज़रूरतों की वजह से आपको कई शादियाँ करनी की ज़रूरत पड़ी और अल्लाह तआला की तरफ़ से इसकी इजाज़त दी गई। चुनांचे उम्र के 54वें साल गुज़रने के बाद से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस सूरत को इख़्तियार किया और आपकी उम्र का मरहला भी अब ऐसा था कि इसमें नई शादी किसी शौक व लुत्फ के लिए नहीं की जाती, सिर्फ ज़रूरत के लिए ही की जाती है। जैसे– जैसे ज़रूरत महसूस करते गए ज़ायद बीवियाँ इख़्तियार कीं। और आपका यह तरीक़ा आपकी उम्र के आखिरी 9 साला मुद्दत के अन्दर रहा और तादाद एक वक्त में 8 से ज़्यादा नहीं हुई और हर नई शादी अपने लिए पूरी पाबंदी और सामाजिक ज़रूरत रखती थी। इस तरह आपने यह खुद ख़्वाहिश से नहीं किया बल्कि नियमपूर्वक अल्लाह तआला की तरफ़ से आपके लिए इसकी गुंजाइश दी गयी ताकि नबूवत के कामों और उम्मत के लिए नाना प्रकार का नमूना पेश करने की सूरत सामने आए और उसके साथ अल्लाह तआला ने पाबन्दी भी ऐसी लगा दी जिससे उनकी ज़िन्दगी मेहनत व कुर्बानी और अल्लाह तआला की रज़ा और दीन के अधीन हो:–

"ऐ पैग़म्बर अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत व आराइश की तलबगार हो तो आओ मैं तुम्हें कुछ माल दूँ और अच्छी तरह से रुख़्सत कर दूँ और अगर तुम खुदा और उसके पैग़म्बर और आखिरत के घर की तलबगार हो तो तुम में जो नेकोकारी करने वाली हैं उनके लिए खुदा ने बड़ा सवाब तैयार कर रखा है। ऐ पैग़म्बर की बीविया! तुममें से जो सरीह नाशाइस्ता, असभ्य, (अल्फाज़ कह कर रसूलुल्लाह को तकलीफ देने की) हरकत करेंगी उसको दूनी सज़ा दी जायेगी और यह बात खुद को आसान है और जो तुममें से खुदा और उसके रसूल की फरमाबरदार रहेंगी और अमल नेक करेंगी उसको हम दूना सवाब देंगे और उसके लिए हमने इज्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है। ऐ पैग़म्बर की बीवियो! तुम और औरतों की तरह नहीं। अगर तुम परहेज़गार रहना चाहती हो तो किसी अपरिचित आदमी से नर्म–नर्म बातें न करो ताकि वह शख़्स जिसके दिल में किसी तरह का मर्ज़ है कोई उम्मीद न पैदा करे और दस्तूर के मुताबिक बात किया करो और अपने घरों में ठहरी रहो और जिस तरह जाहिलियत के दिनों में बनाव श्रृंगार का दिखावा करती थीं उस तरह श्रृंगार न दिखाओ और नमाज़ पढ़ती रहो और ज़कात देती रहो। खुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करती रहो। ऐ पैग़म्बर के अहले बैत! खुदा चाहता है कि तुमसे नापाकी दूर कर दे और तुम्हें बिल्कुल पाक–साफ कर दे। और तुम्हारे घरों में जो खुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिकमत की बातें सुनाई जाती हैं उनको याद रखो। बेशक खुदा बारीकबीं (सूक्ष्मदर्शी) और बाखबर है।" (अहज़ाब: 28–34)

ज़्यादा बीवियों का रिवाज यूं भी उस ज़माने के अरबों में आम था, उसमें ख़्वाहिश व पसंद के अलावा और खानदानी ज़रूरत के साथ–साथ कुछ दूसरी ज़रूरतें भी हुआ करती थीं, उनमें से एक बात औलाद की संख्या बढ़ाना था ताकि क़बीले की संख्यात्मक शक्ति में उन्नति हो। क्योंकि कबीलों के बीच में आपसी लड़ाइयों का सिलसिला चलता रहता था और दूसरे खानदानों में अपने रिश्ते बनाने के ज़रिये अपने

खानदानी सहायकों की संख्या बढ़ाने के लिए भी होता था। इस मक़सद के लिए वह मुखतलिफ ऊँचे खानदानों में रिश्ते करते थे ताकि दूसरे खानदानों में रिश्ता कायम होने पर उनको ज़रूरत पड़ने पर समर्थन और सहायता हासिल हो जाए। किसी खानदान के फर्द का दूसरे खानदान के फर्द से वैवाहिक सम्बन्ध हो जाना उस खानदान से सहयोग और समर्थन का ज़रिया बनता था। और यह काम मनमाने तरीक़े से किया जाता था। इस्लाम के आने के बाद उसको ऐसा कन्ट्रोल किया गया कि उसमें मनमानी और बेजा तरीक़ा इख़्तियार न किया जा सके। आपको नबवी ज़िम्मेदारियों के अंजाम देने और दुश्मनों की दुश्मनी पर रोक लगाने की हिकमत ने भी आपके लिए कई निकाह की ज़रूरत पैदा की।

इस्लाम से पहले अरबों की रास्ता भटकी जाहिलियत की ज़िन्दगी में इज़दिवाजी तअल्लुक (वैवाहिक सम्बन्ध) तकरीबन चार मुखतलिफ़ तरीक़ों से क़ायम किया जाता था। उनमें से कई तरीके ज़्यादा आज़ादरवी के बल्कि लज्जारहित थे इस्लाम ने आकर उसमें से सिर्फ एक तरीका जो शरीफाना और मुनासिब तथा लल्लायुक्त था बाक़ी रखा और अनिवार्य कर दिया। बाकी तरीक़ों को ममनूअ़ (वर्जित) करार दिया[1] और उसके साथ ज़रूरत पड़ने पर सिर्फ चार बीवियों तक की गुन्जाइश रखी और अपने आखिरी नबी के लिए दावती, इन्तिज़ामी मसलेहत की खातिर उसके इज़ाफे की गुन्जाइश कर दी, लेकिन उसको भी 11 तक सीमित कर दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़दिवाजी ज़िन्दगी का जायज़ा लेने पर यह विशेषता पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाती है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पूरी इज़दिवाजी ज़िन्दगी बहुत सावधान और जवानी की ख्वाहिश और मनमानी ज़िन्दगी की बेएहतियातियों से बिल्कुल सुरक्षित थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबूअत मिलने से पहले भी खानदान में ख़ैरख्वाही और ख़ैरपसन्दी के जो काई काम होते उसमें भरपूर हिस्सा लेते। वैवाहिक जीवन शुरु करने में आपने कोई जल्दबाज़ी भी नहीं की बल्कि संजीदा अंदाज़ में और एहतियात के साथ समय गुज़ारा और जब अच्छा रिश्ता मिला तो वैवाहिक जीवन में क़दम रखा।

आपकी पहली बीवी ख़दीजा बिन्ते खुवैलिद हुई, जो आपसे 15 साल बड़ी थीं और जो पूरे कबीले में इज़्ज़त वाली, सदाचारी समझी जाती थीं और एक शौहर के इन्तिकाल के बाद बेवह हो गयी थीं[2]।

नबूवत की ज़िम्मेदारी मिलने से पहले जबकि आप पर कोई मज़हबी पाबन्दी ज़रूरी नहीं हुई थी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके साथ आपसी मुहब्बत व उल्फत और एक दूसरे से मुवानिसत (आत्मीयता) के अंदाज़ से संजीदा और सम्मानपूर्वक ज़िन्दगी गुज़ारी और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबूवत की ज़िम्मेदारी सुपुर्द हुई तो भी उनका व्यवहार आपके साथ समर्थन और अनुकूलता का रहा और जब भी बड़ी ज़िम्मेदारी के एहसास से ज़हनी दबाव महसूस करते तो आपको आपकी पत्नी की तरफ से तसकीन व हमदर्दी हासिल होती थी। चुनांचे जब आप पर पहली "वही" (ईश्वाणी) आई और आपने उसका बहुत बोझ महसूस किया तो वह आपके दिल को

---

1. तफ़सीर तबरी 18/401, सही बुख़ारी, किताबुन निकाह, बाबमन काला ला निकाह इल्लाह बिवलीयिहि।
2. अलबिदाया वन–निहाया 2/297–295

मज़बूत करने के लिए अपने रिश्तेदार वरक़ा बिन नौफल के पास ले गई और उनसे तसकीन की बात कहलवाई। वह पिछले नबियोंके हालात का इल्म रखते थे और उनको पिछले नबियों के अक़वाल (कथन) से ऐसी सूरत के वजूद में आने का इल्म हासिल हो चुका था। लिहाज़ा उन्होंने तसकीन दी और नबूवत की तसदीक़ की[1]। उसके बाद जब नबूवत की ज़िम्मेदारी आप अंजाम देने लगे और उसकी वजह से लोगों की तरफ से आपको तकलीफें पहुंचाई जाने लगीं तो आप उससे प्रभावित हो कर जब घर लौटते तो आपकी बीवी तसकीन व हमदर्दी के अल्फाज़ प्रयोग करतीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उनके जीवन काल में उनके अलावा किसी दूसरी औरत से निकाह नहीं किया बल्कि उन्हीं पर संतोष किया। यहां तक कि 25 साल उनके साथ गुज़ारे, उसके बाद उनका देहान्त हो गया।

आपने अपनी पहली बीवी हज़रत खदीजा रज़ि0 के इन्तिकाल के बाद जो कि आपकी 50 साल की उम्र होने पर वफात पा गयी थीं, कुछ दिन ठहरे रहे फिर ताल्लुक वालों के मशवरे पर जिन खातून (महिला) से निकाह किया वह बड़ी उम्र वाली थीं और उनमें भी ज़ाहिरी कशिश भी कम थी। यह हज़रत सौदा बिन्त ज़मअ क़रशिया आमिरया थीं उनका रिश्ता कुबूल करने में अपनी उन साहबज़ादियों की जो अभी कम उम्र थीं की देख भाल और सरपरस्ती की ज़रूरत की मसलेहत थी। इसीलिए बड़ी और संजीदा तबीअत खातून को जीवन साथी (रफीक–ए– हयात) बनाने को इख़्तियार किया[1]।

उम्र के 53 साल गुज़र जाने के बाद जब अपने मानने वालों के साथ हिजरत करके मदीना आ गए और वहां के मुसलमानों की सामाजिक और दीनी मसलहतों के मुनासिब तरीके इख़्तियार करते हुए जंगों से साबिका पड़ा तो आपको मुख्तलिफ़ खानदानों और कबीलों को, उनमें वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके, करीब करने और अपना हमदर्द (शुभचिन्तक) बनाने की ज़रूरत से विभिन्न प्रधान लोगों और सरदारों के यहां के रिश्ते क़ायम किये और उसके ज़रिये इंसानी हमदर्दी और समानता की भी बाज़ मिसालें क़ायम कीं। चुनांचे कुरैश के सरदार के सेनापति की बेटी उम्मे हबीबा बिन्त अबू सुफियान उमवी को पत्नी के रूप में क़बूल किया, जिन्होंने इस्लाम को अपने शौहर के साथ कुबूल करके हब्शा हिजरत की थीं और वहां उनके शौहर इस्लाम छोड़ कर ईसाई हो गऐ थे और वह तन्हा पड़ गई थीं, और यहूदी कबीला बनू नज़ीर के सरदार हय्यि बिन अख़तब की बेटी सफिया नज़रया यहूदिया को बीवी बनाया[1] जो कि जंग में गिरफ़्तार हो कर बांदी क़रार पाई थीं। आपने यहूदी क़बीले पर एहसान रखने की खातिर उनको आज़ाद करके अपनी ज़ौजियत में ले लिया और एक दूसरे यहूदी क़बीले बनु मुस्तलिक़ के सरदार हारिस बिन ज़रार की बेटी जुवैरिया भी बांदी हो कर मुसलमानों को हासिल हुई थीं। उनको भी आपने सरदार कबीले को एहसान मंद बनाने के लिए आज़ाद किया और उनको भी रफ़ीक़–ए–हयात (जीवन साथी) बना लिया[2]। जिसके असर से

1. सीरत इब्ने हिशाम 1/236–241

1. अलकामिल फ़ित्तारीख 2/307, ज़ादुल मआद 1/105

1. सीरत तबरी 3/165, अलकामिल फ़ित्तरीख 2/307
2. सीरत इब्ने हिशाम 2/646

पूरा क़बीला एहसानमंद हुआ और मुसलमान हो गया। दूसरी तरफ अपने क़रीबतरीन साथी हज़रत अबूबक्र की साहबज़ादी हज़रत आइशा को दूसरे क़रीबतरीन सहाबी हज़रत उमर की साहबज़ादी हज़रत हफ़सा को रफ़ीक–ए–हयात बनाया[1]। तीसरे करीब तरीन सहाबी हज़रत उस्मान बिन अफ्फान जो कि क़बीले कुरैश के खानदान उमवी के अहम फर्द थे, जिसके सरदार अबू सुफियान आपसे जंग के सरबराह होते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी दो साहबज़ादियों को उनकी ज़ौजियत में दिया[2]।

उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा हिलालिया को अपनी ज़ौजियत में कुबूल किया, जो शादी के दो माह बाद वफात पा गईं[3]। फिर उम्मे सलमा हिन्द बिन्त उमय्या फ़रशिया मखजूमिया को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपनी ज़ौजियत में लिया[4]। उनहोंने अपने शौहर के हिजरते मदीना के मौके पर अपने खानदान की तरफ से तकलीफ पहुंचाने का सिलसिला साल भर तक बर्दाश्त किया था और इस्लाम की वफ़ादारी में फर्क नहीं आने दिया था और साल भर के मुजाहिदे के बाद मदीना अपने शौहर के पास आई, लेकिन जल्द ही एक जंग में उनके शौहर शहीद हो गए और वह तन्हा रह गई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको ज़ौजियत में लेकर हमदर्दी का सबूत दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी फूफीज़ाद बहन ज़ैनब बिन्त जहश जो खानदानी इज़्ज़त का बड़ा मकाम रखती थीं जमहूरियत व मसावात की मिसाल क़ायम करने के लिए अपने आज़ाद करदा गुलाम ज़ैद बिन हारिस की ज़ौजियत में दे दिया। उन्होंने भी इस निकाह को अपनी तबीअत पर जब्र करके अपने मामूज़ाद भाई को जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे उनकी मर्ज़ी को अपनी मर्ज़ी पर तरजीह देते हुए कुबूल किया। बाद में दोनों के ताल्लुकात साज़गार (अनुकूल) न हो सके और हज़रत ज़ैद ने तलाक़ दे दी। जिससे उन मुअ़ज़्ज़ज़ (सम्मानित) खानदान की खातून की एक आज़ाद करदा गुलाम से तलाक़ मिलने पर दिलशिकनी हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी पूर्ति में उन तलाक़ शुदा को अपने निकाह में कुबूल फरमा लिया[1]। इस तरह एक दूसरी मिसाल यह क़ायम की कि अल्लाह तआला के उस हुक्म पर सबके सामने ऐलान हो गया कि हज़रत ज़ैद जो आज़ाद किये हुए गुलाम होने के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से मुंह बोले बेटे बनाए गये थे, मुंह बोले बेटे की तलाक़शुदा बीवी से शादी जाहिलियत में ऐब समझी जाती थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस तलाक़शुदा का सम्मान करते हुए अल्लाह तआला के हुक्म से यह बात भी ज़ाहिर फरमा दी कि (मुतबन्ना) मुंह बोले बेटे से कोई बेटे की तरह नहीं हो सकता, और उसकी वज़ाहत कुर्आन मजीद में भी आ गयीः– अनुवादः "फिर जब ज़ैद ने उससे (कोई) आवश्यकता (सम्बन्ध) न रखा (यानी उसको तलाक़ दे दी) तो हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया"[2]। (सूरः अहज़ाब–37)

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/645
2. तारीख़ तबरी 3/161–162, ज़ादुल मआद 1/106
3. अलबिदाया वन–निहाया 5/293
4. ज़ादुल मआद 1/106, सीरत इब्ने हिशाम 2/647

1. तारीख़े तबरी 3/164, ज़ादुल मआद 1/106
2. तारीख़े तबरी 3/165

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिस्र के हाकिम मुकैकिस की तरफ़ से भेजी हुई एक बांदी मारिया बिन्त शमऊन क़िबतिया से जो अरब न थीं आज़ाद करके अपनी ज़ौजियत में लिया। इसी तरह एक दूसरी बांदी रैहाना बिन्त ज़ैद जो कबीले बनू नज़ीर की थीं, इस्लाम कुबूल करने के बाद उनको आज़ाद फरमाया और फिर उनको अपनी ज़ौजियत में कुबूल किया[1]। और इस तरह इंसानी मसावात की मिसालें क़ायम कीं कि कोई खातून बांदी रही हो तो आज़ाद कर देने के बाद आज़ाद खातून के रुतबे में आ जाती है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सब उस सूरत में किया कि दस्तूर के मुताबिक आप उन सबको बांदी रखते हुए बीवी वाला फाएदा उठा सकते थे लेकिन आपने ऊंच नीच खत्म करने के लिए ऐसा किया।

अज़वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) में आख़िर में आप सल्ल0 की रफीक–ए–हयात (जीवन साथी) बनने का सम्मान मैमूना बिन्त हारिस अलहिला–लिया को हासिल हुआ।

बहरहाल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने विभिन्न महिलाओं से शादियाँ कुबूल फरमाईं जो कि सबके सब आपकी उम्र के 53 साल गुज़र जाने के बाद के ज़माने में हुईं उनमें कई का साथ दो तीन साल रहा। किसी के साथ इससे कम किसी के साथ इससे ज़्यादा। लेकिन सब सिर्फ आपकी मुबारक ज़िन्दगी के आखिरी 8–10 साल के अन्दर अमल में आया जो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र की 53 साल से 63 साल की बीच की मुद्दत है।

आप अपनी उन बीवियों के मामले में मदीने के निवास की सूरत में बराबरी व इंसाफ से काम लेते थे और उसके लिए समय को बांटने का तरीक़ा इख़्तियार करते और जब सफ़र का मौक़ा आता तो अपनी अज़वाजे मुतह्हरात के दर्मियान क़ुरआ डाल कर, जिसका नाम क़ुरआ में आता उसी को साथ ले जाते। इस तरह हर एक को सफ़र की रिफाक़त (साथ) का मौका मिलता और यह सब अल्लाह तआला की "वही" के मुताबिक होता था। खालिस अपनी मर्ज़ी से नहीं होता था और ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला की तरफ से बताया गया जो अमल भी आप करते थे, उसमें अल्लाह तआला की तरफ से कोई हिकमत रखी गयी होती थी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर रफीक़–ए–हयात की अपनी खुसूसियत और एहमियत थी, जिसमें कोई इफादियत और हिकमत रखी गयी होती वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हासिल होती थी। आपको उम्मत की रहनुमाई और अल्लाह तआला की तरफ से तय की गयी ज़िन्दगी के लिए क़ाबिले इतिबा नमूना होना था। शौहर और बीवी के बीच विभिन्न प्रकार के जो मसाएल उठते हैं उनके सिलसिले में शरीअत का जो हल होता उसके लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी से नमूना होना था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इज़दिवाजी ज़िन्दगी के अन्दुरूनी हालात के सिलसिले में इन्हीं पाक बीवियों से नबवी नमूने का इल्म शरअी हुक्म के रूप में सामने आता था। अतः हज़रत आइशा रज़ि0 के ज़रिये बहुत से हालात में नबवी आदर्श का स्पष्टीकरण हुआ। इसके अलावा बीवी से

1. ज़ादुल मआद 1/108

शौहर को इंसानी स्तर पर जो ताकत और तसकीने खातिर मिलना इंसान की प्राकृतिक ज़रूरत है वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी विभिन्न बीवियों से विभिन्न मौक़ों पर हासिल होती रही।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबूवत मिलने पर जिस तकवियत और तसकीने खातिर की इंसानी ज़रूरत थी, वह हज़रत खदीजा बिन्त ख़ुवैलिद रज़ि0 से मिली, जिसका तज़किरा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि0 से किया। इस तरह सुलह हुदैबिया के मौके पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को संदेह हुआ कि आपके असहाब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कहने पर अमल नहीं कर रहे हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवी हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसा मशविरा दिया जिससे मसअला हल हो गया और सबने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक कुर्बानी के जानवरों की कुर्बानी कर दी और बाल बनवाए गये[1]।

हज़रत आइशा रज़ि0 (हज़रत सौदा बिन्त ज़मआ की एक साल बाद नबूवत के 11वें साल शव्वाल में आपके निकाह में आई) से दूसरे पहलुओं में मदद मिली और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निजी ज़िन्दगी के मामलात में अहकाम मालूम हुए। उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आमाल व अकवाल के सिलसिले में 2010 हदीसें रिवायत कीं जिनसे शरीअत के बहुत से मसाएल लिए गये हैं। इसके अलावा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद 48 साल तक हयात रहीं और इस मुद्दत में औरतों की दीनी तरबियत और दूसरी तरबियती कोशिशों को अंजाम दिया। 17 शाबान 57 या 58 हिजरी में इन्तिकाल किया और बक़ी में दफ़न हुई।

हज़रत हफ़सा रज़ि0 भी अपनी नेक अमली के साथ दीन की तकवियत का ज़रीआ बनीं और उनसे 200 हदीसें मरवी हैं। शाबान 3 हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजियत में आयीं। शाबान 45 हिजरी में मदीना मुनव्वरह में 60 साल की उम्र में इन्तिकाल किया।

उम्मुल मसाकीन हज़रत ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 4 हिजरी में निकाह किया। शादी के तीन महीने बाद रबीउस्सानी 4 हिजरी में वफ़ात पा गयीं और बक़ी में दफ़न हुई।

उम्म सलमा हिन्द बिन्त अबी उमय्या शव्वाल 4 हिजरी में आपकी ज़ौजियत में आयीं और 84 साल की उम्र में 59 हिजरी में इन्तिकाल किया और बक़ी में दफ़न हुई।

हज़रत ज़ैनब बिन्त जहश के ज़रिये मुतबन्ना (मुंह बोला बेटा) बनाने और उसके असर से जो रस्म क़ायम थी और आज़ादशुदा और बांदी और शरीफ़ज़ादी के दरमियान फ़र्क़ किये जाने को खत्म करने की मिसाल क़ायम हुई। जिकाअदा 5 हिजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में आई और 53 साल की उम्र के 20 हिजरी में वफ़ात पा गयीं। बक़ी में दफ़न हुई।

जुवैरिया बिन्त हारिस 5 या 6 हिजरी में आपके निकाह में आयी 65 साल की उम्र में 56 हिजरी में इन्तिकाल किया और बक़ी में दफ़न हुई।

हज़रत उम्मे रम्ला बिन्ते अबू सुफियान और उनके शौहर अब्दुल्लाह बिन जहश दोनों ने इस्लाम पर मक्के वालों की

1. सही बुखारी, किताबुश्शुरूत... अबूदाऊउ 2725, मुसनद इमाम अहमद 4/323, 326, 328, 3331, ज़ादुल मआद 3/295

तरफ से जो तकलीफें उठायी थीं और उनसे मजबूर हो कर हब्शा हिजरत की थी, हब्शा में अब्दुल्लाह बिन जहश ईसाई औरतों के फित्ने में पड़कर मुरतद् (विधर्मी) हो गये थे। उनसे हज़रत रम्ला की ज़ौजियत खत्म हो जाने पर जो सदमा उनको हुआ उसकी पूर्ति हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको अपनी ज़ौजियत में ले कर फरमाई। हज़रत रम्ला ने हुजूर सल्ल0 की बेहतर रफीक–ए– हयात (जीवन साथी) के तौर पर ज़िन्दगी गुज़ारी।

सफ़िया बिन्त हय्यि बिन अख्तब को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वाकिये ख़ैबर के बाद सन् 7 हिजरी में अपनी ज़ौजियत में लिया। 50 हिजरी में इन्तिक़ाल किया और बक़ी में दफ़न हुई।

मैमूना बिन्त हारिस उमरतुलकज़ा के साल (जिकअ़दा 7 हिजरी) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौजियत में आई। मुकामे सरिफ़ में 61 हिजरी में इन्तिक़ाल किया और वहीं दफ़न हुई।

नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम बीवियों ने अपनी अपनी जगह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी रिफ़ाक़त से तक़वियत और तसकीन का फर्ज अंजाम दिया और नबूवत के फैले हुए और तरह–तरह के कामों को पूरा करने में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी के निजी दायरे में मदद पहुंचाई। अज़वाजे मुतह्हरात में से दो हज़रत खदीजा और उम्मुल मसाकीन ज़ैनब का इन्तिकाल हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी में हुआ। बक़ियः आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद हयात रहीं।

अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तौर तरीक़े को क़यामत तक आने वालों के लिए आप सल्ल0 की शरीअत और दीन की ताबेदारी के लिए नमूना क़रार दिया। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुख़तलिफ अंदाज और तरीके इंसानी ज़िन्दगी में पेश आने वाले हालात में रहबरी का ज़रिया रखते हैं, किसी को ज़ौजियत में लेने के लिससिले में किस तरह की सूरतें पेश आ सकती हैं उन सूरतों में क्या किया जा सकता है वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नमूनों से हासिल होगा।

आम इन्सान के लिए अगर एक से ज़्यादा बीवी है तो दोनों के दरमियान पूरा इंसाफ बरतना कितना मुश्किल होता है। इसके बजाए किसी के साथ बराबरी का मामला हो तन्हा यह बात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बहुत बड़ा मुजाहिदा था। जिसको देख कर आदमी के लिए, जिसकी एक से ज़ायद बीवियाँ हों नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उसवा (आदर्श) किस क़दर हिम्मत और हौसला दिलाने वाला है। इस तरीक़े से बीवी के मामले में जो मुन्सिफ़ाना और इंसानी जज़्बे को इख्तियार करने की तल्क़ीन है इसके लिए वह रहनुमाई करने वाला नमूना है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़ाहिदाना ज़िन्दगी, संयमी जीवन और मोहतात सीरत व अखलाक़ और दुनियावी राहत व आराम से बेरग़बती का तरीक़ा इख़्तियार कर रखा था। इसमें अपनी बीवियों को भी शरीक रखा। उनसे फरमाया कि अगर वह आराम चाहती हैं तो आप उनको अपनी ज़ौजियत से आज़ाद कर सकते हैं और इसके लिए उनको ग़ौर करने का मौक़ा दिया, लेकिन उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रह कर

तकलीफ़ में ज़िन्दगी गुज़ारने को तरजीह दी और आपके साथ एकता और सहयोग के साथ समय गुज़ारा और उत्कुष्ट आचरण रखने वाले कुनबे का सबूत दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलाद- हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत खदीजा की रिफाकत 25 साल रही। 15 साल नबूवत से पहले और 10 साल नबूवत के बाद। इस दरमियान में उनसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कई औलादें हुई। साहबज़ादे हज़रत क़ासिम, तय्यब, ताहिर और हज़रत अब्दुल्लाह हुए, जो अपने बचपने की उम्र में इन्तिक़ाल कर गये और चार साहबज़ादियाँ हुई, जिनमें सबसे बड़ी ज़ैनब रज़ि0 हुई जो बेसते नबूवत से 10 साल पहले पैदा हुई। उनकी शादी अबुल आस बिन लक़ीत से हुई और हुजूर सल्ल0 की ज़िन्दगी ही में सन् 8 हिजरी में इन्तिक़ाल हुआ। उनसे एक बेटी उमामा हुई और एक बेटे अली हुए[1]।

आप सल्ल0 की दूसरी साहबज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ि0 हुई जो नबूवत से 8 साल पहले पैदा हुई और उनकी शादी अबू लहब के बेटे उतबा से हुई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबूवत मिलने पर अबू लहब ने जो दुश्मनी इख़्तियार की उसी सम्बन्ध में उसने ज़बरदस्ती तलाक़ दिलवा दी। फिर उनकी शादी हज़रत उस्मान रज़ि0 से हुई और उनका भी इन्तिकाल आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात ही में हिजरत के दूसरे साल हुआ[1]।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि0 हुई। उनकी पैदाईश भी नबूवत से पहले हुई। उनकी शादी अबू लहब के बेटे उतैबा से हुई और उनसे भी अबू लहब ने अपने बेटे से तलाक़ दिलवा दी और जब हिज़रत के दूसरे साल हज़रत रूकय्या रज़ि0 का इन्तिक़ाल हुआ और हज़रत उस्मान रज़ि0 के यहां गुंजाइश निकल आयी तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी शादी भी उनसे कर दी। इस तरह हज़रत उस्मान रज़ि0 आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो साहबज़ादियों के शौहर हुए। इसी बिना पर उनको "जुननूरैन" का खिताब हासिल हुआ। उन साहबज़ादी का भी इन्तिक़ाल हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तय्यबा में ही हो गया, यह सन् 9 हिजरी का वाक़िया है[1]।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की चौथी साहबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ि0 हुई जो नबूवत के 5 साल पहले पैदा हुई और उनकी शादी हज़रत अली रज़ि0 से हुई। यह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सबसे छोटी साहबज़ादी थीं और उनसे ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नस्ल चली। दो बेटे हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि0 हुए। यह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते तय्यबा में रहीं, अलबत्ता आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के छः माह बाद इन्तिक़ाल कर गयीं। उनका साथ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तमाम उम्र रहा, क्योंकि शादी से पहले तो रहा ही था शादी के बाद भी रहा क्योंकि हज़रत अली आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहते थे। इसलिए आप

1. अलबिदाया वन–निहाया 5/307

1. सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद, लेखक मुहम्मद बिन यूसुफ, सालिही शामी 11/29–32

1. सालिही शामी 33/35

का भी साथ रहा, उसकी वजह से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़क़त और मुहब्बत उनको बहुत मिली और खुसूसी तरबियत हुई। फिर इसी ताल्लुक से उनके साहबज़ादों हज़रत हसन व हज़रत हुसैन ने भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़क़त व तरबियत का बड़ा हिस्सा पाया और इसी के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको आख़िरत की फिक्र और दुनिया से बेताल्लुकी का आदी बनाया और इस ताल्लुक से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फातिमा और दोनों साहबज़ादिगान को बहुत मुहब्बत के अल्फाज़ से नवाज़ा[1]। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे मुहब्बत सिर्फ नवासों की तरह नहीं बल्कि पोतों की तरह करते थे और वह दोनों भी बहुत सआदतमंद और सालेहतरीन सीरत व अख़लाक़ के हुए और उनसे वही नमूना ज़ाहिर हुआ जो एक सर्वश्रेष्ठ नवी के नवासों और पोतों से ज़ाहिर होता है।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह सब साहबज़ादियाँ और साहबज़ादे हज़रत ख़दीजा रज़ि0 के बतन शरीफ से थे[1]। अलावा एक साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम के जो हिजरत के कई साल बाद हज़रत मारिया क़िबतिया रज़ि0 के आप की ज़ौजियत में आने पर पैदा हुए लेकिन वह भी बचपने ही में इन्तिकाल कर गये। ये हज़रत खदीजा की वफात के कई साल बाद पैदा हुऐ थे[2]।

हज़रत फातिमा रज़ि0 की ज़िन्दगी भी ज़्यादा लम्बी नहीं हुई वह अपने वालिद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात के सिर्फ छः माह बाद इन्तिक़ाल कर गयीं और अपने दोनों बेटों को यतीम छोड़ कर गईं, जिनमें एक की उम्र उस वक्त 7 साल और दूसरे की सिर्फ 8 साल थी। वह अपने नामवर वालिद की संरक्षता में बढ़े और जवान हुए, उनके वालिद हज़रत अली हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहले खलीफ़ा हज़रत अबूबक्र रज़ि0 से उम्र में 27 साल छोटे थे और दूसरे खलीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0 से 17 साल और तीसरे खलीफा हज़रत उस्मान रज़ि0 से भी उम्र में छोटे थे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दामाद होने की सिफ़त में हज़रत उस्मान रज़ि0 उनके शरीक थे। इस तौर पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी भी बेटियाँ एक के बाद दूसरी उनके निकाह में आयी थीं। इस तरह वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोहरे दामाद हुए। हज़रत अली रज़ि0 उनके बाद खलीफ़ा हुए। इस तरह यह चार खलीफ़ा खुलफा–ए–राशिदीन कहलाए और उन चारों ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखा हुआ तरीक़–ए–हुकूमत और इमारत अच्छे तरीके से इख्तियार किया और दुनिया के सामने उसको नमूने के तौर पर पेश किया। इन चारों की खिलाफ़त का ज़माना लगभग तीस साल रहा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद साहब तो आपकी पैदाइश से पहले ही वफात पा चुके थे। आपके 11 चचा थे उनमें से सिर्फ दो ईमान लाए थे, सय्यिदुश्शुहदा हम्ज़ा, और हज़रत अब्बास रज़ि0। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाँच फूफियाँ थीं उनमें से सिर्फ हज़रत सफीया रज़ि0 ईमान लायीं थीं। ❑❑

1. अलबिदाया वन–निहाया 5/308, सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद 11/36

1. सुबुलुल हुदा वररशाद फ़ी सीरते खैरिल इबाद, लेखक मुहम्मद बिन यूसुफ, सालिही शामी 11/55–82

1. अलबिदाया–वन–निहाया 5/309, अनसाबुल अशराफ़ 448–453

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को अपनी पसन्दीदा राह बताने के लिए हर ज़माने और हर इलाके में नबी भेजता रहा, इस जमाने में दुनिया भर के इन्सानों में बड़ा बिगाड़ आया हुआ है तो क्या यह उम्मीद की जा सकती है कि इस ज़माने में भी कोई नबी अल्लाह तआता भेजेंगे?

उत्तरः अल्लाह तआला अपने बन्दों को अपनी पसन्दीदा राह दिखाने और बताने के लिए हर ज़माने और हर इलाके में अपने नबी और रसूल भेजता रहा है और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक कहा जाता है कि एक लाख चालीस हज़ार नबी भेजे। उनकी सही गिनती अल्लाह को मालूम है। लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आखिरी नबी बना कर भेजा और आपको ऐसी किताब दी और ऐसा इल्म दिया जो कियामत तक के लोगों की हिदायत के लिए काफी है। अल्लाह तआला ने कुर्आन मजीद में एलान कर दिया कि मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया (देखिये सूरः मायदा की आयत नं03) कि मुहम्मद आखिरी नबी हैं (देखिए सूर–ए–अहज़ाब आयत नं0 40) और अपने नबी को हुक्म दिया कि आप खुद भी खत्मे नुबूवत का एलान फरमा दें, चुनांचि हदीस में मौजूद है कि आपने फरमाया की, मैं आखिरी नबी हूँ और मेरे बाद कोई नबी नहीं, लिहाजा अब ता कियामत किसी नबी की कोई ज़रूरत नहीं, इस आखिरी शरीअत में कियामत तक आने वाली तमाम जरूरतों का हल, तमाम मुआशरे की बीमारियों का इलाज मौजूद है, और उलमा–ए–उम्मत उस की रहनुमाई फरमा रहे हैं और उनका यह काम बराबर जारी रहेगा, रहा फसाद का आम होना यह तो हमारी बद आमालियों का नतीजा है, ऐसा नहीं है कि किसी बिगाड़ का कोई इलाज बताने वाला नहीं है बल्कि ख़राबी इलाज का क़बूल न करना है, बहर हाल अब कियामत तक किसी नबी के आने की उम्मीद करना ग़लत है, अलबत्ता कियामत के करीब जब दज्जाल ज़ाहिर होगा तो अल्लाह तआला हज़रत ईसा अलै0 को उसके कत्ल के लिए चौथे आसमान से उतारेंगे, अहादीस से साबित है कि हज़रत ईसा अलै0 को जब यहूदियों ने साजिश करके उस वक्त के बादशाह से क़त्ल कराना चाहा तो अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै0 को ज़िन्दा आसमान पर उठा लिया, वह आसमान से उतरेंगे, दज्जाल को कत्ल करेंगे, वह अपनी शरीअत न चलाएंगे बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत पर चलेंगे और जब तक ज़िन्दा रहेंगे, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई शरीअत पर लोगों को चलाएंगे।

प्रश्नः आज मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी का दीन भारत के हर सूबे में मौजूद है, बाहर के मुल्कों खास तौर से लन्दन और अमेरीका, अफ्रीका आदि में पहुंच चुका है, मिस्र में भी मौजूद है,

कुछ लोग धोखा खा रहे हैं कि अगर यह बातिल दीन है तो इतना मक़बूल क्यों है? इस पर कुछ रौशनी डालिये।

उत्तरः दीने इस्लाम से वाकफियत न रखने वाले, होशो हवास रखने वाले इन्सानों में किसी बातिल दीन की मक़बूलियत उसके हक होने की दलील हरगिज़ नहीं। हक व बातिल को परखने की कसौटी किताब व सुन्नत है, गुलाम कादियानी का चलाया कादियानी दीन दीने बातिल है, दुनिया के तमाम उलमा का मुत्तफ़िक़ा फैसला है कि यह दीन बालित है और गुलाम कादियानी का दीन मानने वाला इस्लाम से खारिज है। इसके फैलने का सबब इस का पैसा है जो इस्लाम दुश्मन बातिल ताक़तों से इसको हासिल हो रहा है। इस सिलसिले में जो इशकाल हो लिखें, जवाब दिया जाएगा, नीज़ मिर्ज़ा के झूठ और उनके फरेब को समझने के लिए शोब–ए–दावत व इरशाद नदवतुल उलमा से राबता करें।

प्रश्नः एक साहब कहते हैं कि हम मिर्जा को नबी नहीं मानते मुजद्दिद मानते हैं उनको क्या जवाब दिया जाए?

उत्तरः मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी के मुतअद्दिद दौर गुजरे हैं, शुरुअ में उनकी तहरीरों से यही लग रहा था कि वह उम्मत में जो खराबियां आ गई हैं उनको दूर करेंगे और ईसाइयों और आर्यो की जानिब से इस्लाम पर जो एतिराज हो रहे हैं उनका मुंह तोड़ जवाब देंगे और इस में कुछ शक नहीं कि शुरुअ में उन्होंने यह सब नुमायां तौर पर किया, लेकिन जल्द ही जाहिर हो गया कि वह तो ईसाइयों से मिली भगत रखते हैं, उनकी मुख़ालिफ़त सिर्फ दिखावा है और मुसलमानों को धोखा देने के लिए है, वह जल्द ही खुल गये और नबी बन बैठे, उन पर कई ज़बानों में वही उतरने लगी, अलबत्ता उन्होंने मुसलमानों को फांसने के लिए उम्मती नबी, ज़ल्ला नबी और बुरुज़ी नबी का लबादा ओढ़ा, जिस को उलमाए हक ने बहुत जल्द भांप लिया, अब अगर किसी को उसके शुरुअ के दौर से ग़लत फहमी हो और उसको मुजद्दिद समझ बैठे तो यह उसकी बड़ी गलती है उसे तौबा करना चाहिए। मुजद्दिद तो दूर की बात है मिर्जा का आम मुसलमान मानना भी गुमराही है।

प्रश्नः कहा जाता है कि हमारी ज़मीन की तरह सात जमीनें हैं और हर ज़मीन पर आबादी है और हर ज़मीन पर नबियों का सिलसिला है, हर ज़मीन पर आदम हैं, नूह हैं, इब्राहीम हैं, और मुहम्मद हैं लेकिन सबके खातिम हमारे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं तो क्या यह मुमकिन है कि किसी ज़मीन के मुहम्मद, हमारे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद भी हो सकते हैं?

उत्तरः यह जो सात ज़मीनों की बात है यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास के एक असर से साबित है, कुर्आन मजीद में ऐसी सात ज़मीनों का जिक्र मिलता है। (देखिए सूर–ए–तलाक़ की आखरी आयत) लेकिन वहां किस तरह के इन्सानों की आबादी है इस की कैफियत अल्लाह ही को मालूम है मेरी नाकिस अक्ल में आता है कि जिन्नों जैसे इन्सान हो सकते हैं चाहे जो हो उन पर हमारा ईमान है। इस लिए कि एक असर से यह बात साबित है, लेकिन यह बात हम ज़रूर मानते हैं कि हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद किसी ज़मीन पर कोई नबी न पैदा होगा। तफ्सील के

शेष पृष्ट.....39 पर

बहादुर शाह ज़फ़र

—अब्दुर्रहमान खान

किसी मुल्क पर कोई क़ौम हमला आवर होती है तो उसे अपना वतन नहीं समझती बल्कि लूट खसोट कर चली जाती है या अपने मातहत को तख़्त पर बैठा कर खिराज वसूलती रहती है। अंग्रेज़ों ने हिन्दुस्तान को जम कर लूटा, सोने की चिड़िया कहलाने वाले हिन्दुस्तान में दरअसल हर तरफ सोना ही सोना था। जिसे देख कर अग्रेंज़ अपने ऊपर काबू न रख सके और तिजारत के बहाने आ धमके। मुगल शहन्शाहों ने न सिर्फ यहाँ कि तअमीर व तरक्की में जबरदस्त रोल अदा किया और गंगा जमुनी तहजीब को फरोग़ दिया बल्कि हिन्दुस्तान को फख की अलामत भी दी, जिसे देखने के लिए दुनिया भर के लोग हिन्दुस्तान आते हैं, इसे न सिर्फ हिन्दुस्तान को बेश बहाज़ मुबादला मिलता है। अफसोस कि उसको बनाने वाले का वजूद अब अदम के दरजे में है, आखरी शहन्शाह बहादुर शाह ज़फर तो आख़िरी सांस तक हिन्दुस्तान के लिए बेचैन थे, यहां के लोगों के बारे में ही सोचते रहते थे। हिन्दुस्तान की नई नस्ल इनके बारे में कम जानती है। सरसरी मालूमात तो सभी को है, लेकिन उनके कारनामों से ना वाकिफ हैं। अब अगर हिन्दुस्तान संगठित है तो उसका सहरा मुगलिया सल्तनत के सर जाता है। मुगल हुकमरां खुसूसन मुहीयुद्दीन औरंगजेब आलमगीर ने अपने अहद में जितना बड़ा मुत्तहिदा हिन्दुस्तान दिया वह अगर कायम रहता तो हिन्दुस्तान आज दुनिया का सबसे ताक़तवर और दौलत मन्द मुल्क होता और पूरी दुनिया की क़यादत कर रहा होता, पूरी दुनिया उसके सामने सर झुकाती। लेकिन मुगल हुकमरां अंग्रेज़ों को रिआयत देते समय उसकी चालाकी समझ न सके, जिसके कारण न सिर्फ मुगलों को अपनी हुकूमत खोनी पड़ी बल्कि हकीक़ी मानों में सफा—ए—हस्ती से भी मिट जाना पड़ा, अबुल मुजफ्फर सिराजुद्दीन मुहम्मद बहादुर शाह दोम की पैदाइश दिल्ली में 24 अक्तूबर 1775 ई0 को हुई थी। अपने पिता अकबर शाह दोम की मृत्यु के बाद 28 सितम्बर 1837 ई0 को दिल्ली के बादशाह बनाये गये। बहादुर शाह ज़फर मुगल खानदान के आखरी बादशाह थे और उर्दू के एक बेहतरीन, माया नाज़ शायर भी थे। उनका सिलसिल—ए—नसब ग्यारहवें पुश्त में शहन्शाह बाबर से मिलता है उनकी माँ लाल बाई हिन्दू राजपूत खानदान से थीं। 1857 ई0 में जब हिन्दुस्तान की आज़ादी की चिंगारी भड़की तो तमाम तमाम लोगों ने उन्हें हिन्दुस्तान का बादशाह समझा और उनकी कियादत में अंग्रेजों की नींदें उड़ा दीं।

हिन्दुस्तानियों ने दिल्ली और मुल्क के अनेक हिस्सों में अंग्रेजों से सख़्त मुकाबला करके शिकस्त दी, लेकिन यह शुरुआती कामयाबी थी। दरअस्ल यह जंगे आज़ादी मुनज्जम न थी। इसलिए अंग्रेजों को तमाम जगह वक्फे वक्फे से मुजाहिदीने आज़ादी से निपटने का मौका मिला। दिल्ली की कामयाबी के बाद अंग्रेज़ फौज़ों ने शहरी आबादी से खौफनाक इन्तिकाम लिया। लोगों को बेदर्दी से क़त्ल किया गया। सैकड़ों को फाँसी दी गई, हज़ारों नुफूस को गोलियों से भून डाला गया इनमें मुजरिम भी थे और बेगुनाह भी। मुसलमान भी मौत के घाट

उतार दिये गये और हिन्दू भी। गोरे जनरल ने अंग्रेज़ फौज़ों की मदद से तकरीबन चार महीने तक दिल्ली का मुहासरा किये रखा। 14 सितम्बर को कश्मीरी दरवाजा तोड़ दिया गया, अंग्रेज़ जनरल इस लड़ाई में मारा गया। मगर अंग्रेज और सिख फौजों ने दिल्ली पर कब्जा करके बहादुर शाह ज़फर को गिरफ्तार करके रंगून भेज दिया। अंग्रेज़ी फौज के सिख सिपाहियों ने क़त्ल व गारत में फिरका वाराना रंग भर दिया, मुसलमान चुन–चुन कर क़त्ल किये गये, बहुत से मुसलमानों की जायदादें तबाह हो गईं। वह कौड़ी–कौड़ी को तरस गये। इन हौलनाक मज़ालिम का इआदा उन मकामात पर भी किया गया जहां पहले मरहले में जंगे आज़ादी की जंग की आग भड़की थी।

इब्तिदाई नताइज हिन्दुस्तान के हक में थे, लेकिन बाद में कुछ लोगों की गद्दारी की वजह से इस जंग का रुख बदल गया। और अंग्रेज़ बगावत को दबाने में कामयाब हो गये। बहादुर शाह जफ़र ने हुमायूँ के मकबरे में पनाह ली, लेकिन अपनों की गद्दारी के कारण मेजर हेडसन ने उन्हें उनके बेटे मिर्जा मुगल खिजर सुलतान और पोते अबूबक्र के साथ पकड़ लिया गया।

जब बहादुर शाह जफ़र को भूख लगी तो अंग्रेजों ने उनके सामने थाली में सजा कर उनके बेटों के सर रख दिये, उन्होंने अंग्रेजों को जवाब दिया कि हिन्दुस्तान के बेटे मुल्क के लिए सर कुर्बान करने अपने बाप के पास इसी अन्दाज़ में आया करते हैं।

बहादुर शाह जफ़र को हर समय हिन्दुस्तान की फिक्र रही। उनकी आखरी इच्छा थी कि वह अपनी ज़िन्दगी की आखरी साँस हिन्दुस्तान में ही लें और वहीं दफन किये जायें। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। मुल्क से अंग्रेज़ों को भगाने का ख़्वाब लिए सात नवम्बर 1862 ई0 को 87 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें रंगून में ही दफन किया गया। उनके दफन की जगह को अब बहादुर शाह जफ़र दरगाह के नाम से जाना जाता है। लोगों के दिल में उनके लिए कितना एहतिराम था, इसका अन्दाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हिन्दुस्तान समेत कई जगह सड़कों के नाम उनके नाम पर रखा गया है।

पाकिस्तान के लाहौर शहर में भी उनके नाम पर एक सड़क है। बांग्लादेश के ओल्ड ढ़ाका शहर में वाके विक्टोरिया पार्क का नाम बदल कर बहादुर शाह जफ़र पार्क कर दिया गया है।

हिन्दुस्तान में केवल एक रोड का नाम बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग है। इसके अलावा कोई भी चीज़ उनके नाम मनसूब नहीं की गई है। और न ही किसी इदारे का नाम इस मुजाहिदे आजादी के नाम पर रखा गया है। इस दर्मियान हुई सकाफती और सियासी तब्दीलियों ने हिन्दुस्तानी समाज का चेहरा पूरी तरह बदल दिया और इन तब्दीलियों के बीच बहादुर शाह जफ़र के वारिसों की ज़िन्दगी भी मुश्किताल से भरी रही।

बर्तानवी हुकूमत के दौरान इनका सब कुछ लुट गया और आज़ाद हिन्दुस्तान में आज के यह मुगल हैदराबाद में किराये के मकान में रह रहे हैं। जबकि अंग्रेजों का साथ देने वाले रजवाड़े, नवाब, हुकमरां आलीशान महलों में रह रहे हैं। मुगलों को तमाम जायदाद से बेदखल कर दिया गया, जब कि अंग्रेजों का साथ देने वालों का कब्जा अपनी जायदाद पर बरकरार है। बेगम लैला उम्मे हानी और उनके

बड़े बेटे जियाउद्दीन तौसी का कहना है हुकूमत अजायब घरों मकबरों और जानवरों की खत्म होने वाली नस्लों की फिक्र तो करती है परन्तु जिन्दा जावेद मुगल बादशाह के वारिसों की उसे कोई फिक्र नहीं है। बहादुर शाह जफ़र के 22 बेटों में से एक के पोते मिर्जा अजीज की पैदाइश हैदराबाद में हुई और लैला उम्मे हानी उन्हीं मिर्जा अजीज की बेटी हैं। उन्हें अपने बुजुर्गों पर नाज है लेकिन अपनी पहचान खुद लोगों को बतानी पड़ती है। इसी तरह कलकत्ता में बहादुर शाह जफ़र की औलाद आज चाय बेच करके अपना गुजारा कर रही है। और वह कलकत्ता के एक झुग्गी बस्ती में रहती है। इनके पर पोते की बहू सुलताना बेगम को महज 400 रूपये पेन्शन मिलती है। सुलताना बेगम उन दिनों को याद करती हैं जब उनका निकाह मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर के पर पोते मिर्जा बदर बख़्त से 1965 ई0 में हुआ था। मिर्जा बदर बख़्त बहादुर शाह जफ़र के छोटे बेटे जमशेद बख़्त के बेटे थे और उनकी माँ का नाम नादिरा जमानी बेगम था। सुलताना बेगम का जब निकाह हुआ था तो उनकी उमर सिर्फ 13 वर्ष की थी। और बदर बख़्त लगभग 45 वर्ष के थे। सुलताना बेगम के अनुसार आज वाकई उनकी शाही मुगल विरासत माजी की बात हो चुकी है। हिन्दुस्तान में अकसर मुजाहिदीने आजादी की यादगारें तामीर की गई हैं। लेकिन हिन्दुस्तान की आज़ादी की दाग बेल रखने और तमाम कौमों में क़ौम परस्ती और वतन से मुहब्बत कर सूर फूँकने वाला शहंशाह का खानदान आज अपने आबा व अजदाद के बनाये हुए किलों, बागात और दीगर काबिले दीद इमारतों में अपनी मौजूदगी के हक़ से भी महरूम है। आज हिन्दुस्तान को आज़ाद हुए 64 साल से ज़्यादा हो गये परन्तु हुकूमत ने इस सिलसिले में आज तक कोई कदम नहीं उठाया। मुल्क के लिए उनकी कुर्बानी यूँही बेकार चली गई, अगर वह चाहते तो अंग्रेजों से समझौता करके ज़िन्दगी भर के लिए शहंशाहियत बचा सकते थे। लेकिन वह इन तमाम चीज़ों को ठोकर मार कर मैदाने जंग में निकल पड़े। और फौजियों की कयादत की, और बिल आखिर वह अपनी जायदाद से महरूम हुए बल्कि अपने दो बेटों और पोतों की कुर्बानी भी दी। ❑❑

आदर्श शासक:.....

पर अडिग रहो।" इसी का प्रदर्शन हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कर रहे थे।

विश्व के समस्त इतिहास कार और विद्वान इस पर एक मत हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने लिए किसी से कभी किसी प्रकार का बदला नहीं लिया। फिर भी बार–बार कह रहे कि मुझसे बदला ले लो।

जैसा कि शुरु में कहा गया कि न्याय शासन की सबसे उच्च नीति है। शासक छोटा हो या बड़ा न्याय सबके लिए होना चाहिए। जो शासक अपने में ही डूबा रहता है, वह कभी क़ानून की हिफाज़त नहीं कर सकता। कौटिल्य और चाणक्य जैसे लोग शासकों को स्वार्थी अत्याचारी और बदकार बनाते हैं। विश्व को पहला लिखित संविधान देने वाले मदीना के अनुपम सम्राट का जीवन चरित्र कुछ और ही है। जिस पवित्र व्यक्तित्व ने मदीने के इस्लामी क्षेत्र को दस लाख मील तक विस्तृत कर दिया, उनका हाल ये था कि अपने आपको कभी अलग नहीं रखा। मगर क्या आज के शासकों में ऐसी कल्पना की जा सकती है? ❑❑

ज़िक्रे मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

—फ़ौज़िया सिद्दीक़ा फ़ाज़िला

सारी तारीफें सिर्फ उस अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है, रहमान है, रहीम है, रोज़े जज़ा का मालिक है, आओ हम सब मिल कर कहें ऐ अल्लाह! हम सब सिर्फ़ तुझ से ही मदद तलब करते हैं, हम को सीधा रास्ता दिखा दे और उस पर चला दे, वह रास्ता जिस पर लोग चले तो आपने उन को तरह–तरह के इनआमात दिये, ऐसे बुरे लोगों का रास्ता नहीं कि जिस पर लोग चले तो उन पर तेरा ग़ज़ब हुआ, न ऐसों का रास्ता जो भटक गये। आमीन या रब्बुल आलमीन!

अल्लाह ने कैसी मुफ़ीद कार आमद ज़मीन बनाई जिस पर हम रहते–बसते हैं, ऊपर नीले आसमान का साइबान तान दिया, उसके अन्दर सूरज, चाँद, तारे, रौशन कर दिये। दिन काम करने और रोज़ी–रोटी कमाने को और रात आराम करने को बनाया। अपनी मख़लूक़ में इन्सान को सब से अफ़ज़ल बनाया और इन्सानों में अपने प्यारे और आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़ैरुल बशर बनाया, उन पर लाखों दुरूद और सलाम हो।

अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक को सीधा रास्ता दिखाने के लिए बहुत से नबियों और रसूलों को भेजा, हज़रत आदम अलै0 हज़रत नूह अलै0, हज़रत इब्राहीम अलै0, हज़रत इस्माईल अलै0, हज़रत मूसा अलै0 और न जाने कितने पैग़म्बर भेजे, जिनकी गिनती अल्लाह ही को मालूम है, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आये तो यहूदियों ने उनकी बड़ी मुख़ालिफ़त की, यहां तक कि उनको सलीब पर चढ़ा देने का फ़ैसला कर लिया, ऐसे मौक़े पर अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै0 को आसमान पर उठा लिया और एक दूसरे शख़्स को हज़रत ईसा अलै0 की शक्ल का कर दिया, जिसको यहूदियों ने सलीब पर चढ़ा दिया।

इसके बाद दुनिया में बड़ा फ़साद फैला, इन्सानियत तिलमिला उठी, जुवा, शराब, क़त्ल, ज़िना, सारे गुनाह खुल्लम खुल्ला होने लगे, बच्चियाँ ज़िन्दा ही दफ़न की जाने लगीं तो अल्लाह तआला की रहमत जोश में आई और अल्लाह तआला ने अपने महबूब और आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दुनिया में भेजा, अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर लाखों रहमतें नाज़िल फरमाये और आप पर लाखों सलाम हो।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वालिदा का नाम आमिना था, और वालिद साहब का नाम अब्दुल्लाह था, अल्लाह की मरज़ी और अल्लाह की मसलिहत कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अभी पैदा नहीं हुए थे कि वालिद साहब का इन्तिक़ाल हो गया, जवान बेटे के इन्तिक़ाल से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब को बड़ा दुख हुआ, लेकिन हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाईश से दादा अब्दुल मुत्तलिब को बे इन्तिहा खुशी हुई।

बीबी आमिना कितनी खुश

किस्मत थीं कि अल्लाह के आखिरी और महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की माँ होने का शरफ उनको हासिल हुआ। जब हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप के बत्ने मुबारक में थे तो हज़रत आमिना ने ऐसे अनवार व बरकात देखे कि उनको वह सोच भी न सकती थीं, न कोई तकलीफ़ न कोई गिरानी, बहुत अच्छे–अच्छे ख्वाब दिखाई देते, ख्वाब में फ़रिश्ते आकर आप को खुशखबरी देते, जिस से उनको अन्दाज़ा होता कि उनके शिकम मुबारक में जो बच्चा पल रहा है वह कोई ग़ैर मामूली बच्चा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश मशहूर क़ौल के मुताबिक़ वाक़िआ फील के पचास रोज बाद बारह रबीउल अव्वल पीर के रोज़ सुबहे सादिक़ के वक़्त हुई (बाज़ मोतबर सीरत की किताबों में नौ तारीख लिखी है)।

मक्का का यह दस्तूर था की कुरैश के यहां जो बच्चा पैदा होता, आस–पास के गाँव से दूध पिलाने वाली औरतें आतीं और बच्चों को ले जा कर अपना दूध पिलातीं, और जब बच्चे का दूध छूटता तो उनके वालिदैन को वापस कर जातीं, कभी दूध छुड़ाने के बाद भी अपने पास रखतीं, यहाँ तक कि बच्चा अपनी ज़रूरियात खुद पूरी करने लगता तो वालिदैन के पास पहुँचा कर इनआ़म व इकराम लेतीं, इसी रिवाज के मुताबिक आप को दाई हलीमा ले गई और आप की बरकात देख कर हैरान रह गई. दूध छुड़ाने के बाद भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दाई हलीमा के सुपुर्द रहे, फिर अपनी माँ के पास आ गए। छः साल की उम्र में माँ का इन्तिक़ाल हो गया, दादा अब्दुल मुत्तलिब ने अपने पास रखा, दस साल के हुए तो दादा जान भी इस दुनिया में न रहे, चचा अबूतालिब के साथ रहने लगे, आपकी बहुत अच्छी सिहत थी, खूबसूरती में यकसां थे, पच्चीस साल के हुए तो बीबी ख़दीजा जो एक रईस औरत थीं वह भी सूरत व सीरत में यकता थीं, उम्र चालीस साल थी, और बेवा थीं, उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ईमानदारी और शराफ़त से मुताअस्सिर हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुद शादी का पैग़ाम दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बूल कर लिया और निकाह हो गया।

अल्लाह के इल्म में तो हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अज़ल ही से ख़ातमुल अंबिया थे, लेकिन जब आप को अल्लाह तआला ने दुनिया में पैदा फ़रमाया और आप चालीस साल के हो गये तो आप को नुबुव्वत अता फरमाई गई, फिर जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैश को बुला कर बताया कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, इस बात का इक़रार कर लो तो कामियाब हो जाओगे, और बताया कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, यह ऐलान सुन कर नेक रूहों वाले तो ईमान लाने लगे और मुसलमान होने लगे, लेकिन बदबख़्त लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुख़ालिफ़त शुरू कर दी यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हक़ीक़ी चचा अबू लहब भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मन हो गये, अबू जहल भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दुश्मन हो गया, लेकिन साथ ही बहुत अच्छे–अच्छे लोग इस्लाम में दाखिल होने लगे, सबसे पहले तो हम सब की माँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी की साथी बीबी खदीजा रज़ि०

ईमान लाई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दोस्त हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ईमान लाए और हज़रत अली जो अभी दस साल ही के थे ईमान ले आये, हज़रत ज़ैद रज़ि0 ईमान ले आये और एक सिलसिला चल पड़ा, शैतान की तिलमिलाहट से मुख़ालिफ़त बढ़ने लगी, यहां तक कि अल्लाह की पनाह! हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़त्ल के मंसूबे बनाये गये, तब अल्लाह के हुक्म से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक रात हज़रत अबूबक्र रज़ि0 को साथ ले कर मदीना की हिज़रत के लिए रवाना हो गये, और खैर व आफ़ियत से मदीना पहुँच गये। अब मदीना से इस्लाम फैलने लगा, यहां तक कि एक दिन वह भी आया जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बड़ी शान व शौकत से दस हज़ार सहाबा रज़ि0 के साथ मक्का मुकर्रमा में दाखिल हुए और काबा को बुतों से पाक करके अल्लाह के हुक्म से उसे मुसलमानों का क़िब्ला बना दिया।

बेशक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम सबके आक़ा हैं, मौला हैं, सरदार हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ में ऐसा ऊँचा अख़लाक़ दिया कि बारी तआला ने खुद ही फरमाया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुलक़े अज़ीम हैं, जिस का कोई सहारा न था, अल्लाह के फ़ज़्ल से उसके सहारा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बने। अल्लाह की मसलिहत से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लिखना–पढ़ना नहीं सीखा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस्ताद सिर्फ अल्लाह हुआ और अल्लाह के हुक्म से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारे आलम को अल्लाह की रज़ा हासिल करने का सबक़ पढ़ाया, अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सारे आलम के लिए रहमत बना कर भेजा, अल्लाह तआला की इजाज़त से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम गुनहगार उम्मत की शफ़ाअत फ़रमाएंगे, यानी अल्लाह तआला से सिफारिश करके उनके गुनाहों की मआफी दिलाएंगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खतिमुल अमबिया व खातिमुर्रुसुल हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद न कोई नबी आयेगा न रसूल। हज़रत ईसा अलै0 जो आसमान से उतारे जाएंगे वह तो पहले से नबी हैं फिर भी दुनिया में आकर आखिरी नबी की शरीअत पर चलेंगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम अम्बिया व रसूल के सरदार हैं और अल्लाह तआला के महबूब हैं, पस हम दुआ करें कि ऐ अल्लाह! अपने महबूब रसूल पर सलामती नाज़िल फ़रमा, ऐ अल्लाह! अपने करीम रसूल पर रहमतें उतार, ऐ अल्लाह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असहाब रज़ि और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद और अज़वाज पर भी सलामती और रहमतें नाज़िल फरमा।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजिज़ात बेशुमार हैं, उनमें से कुछ का ज़िक्र किया जाता है, एक रात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जिब्रील अलै0 तशरीफ़ लाए और बुर्राक़ सवारी पर सवार करके क़अबा से बैतुल मुक़द्दस ले गये, वहां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नबियों को नमाज़ पढ़ाई और अम्बिया किराम अलै0 की इमामत की। फिर वहां से जिब्राईल अमीन अलै0 के साथ बुराक़ पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सातों आसमानों के ऊपर गये, अल्लाह तआला से राज़ो नियाज़ की बातें की, अल्लाह की जानिब से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को और आपकी उम्मत को पन्ज वक़्ता नमाज़ का तोहफा मिला। मक्का से बैतुल

मुकद्दस, बैतुल मुकद्दस से आसमानों के ऊपर जाना, हर हर आसमान पर किसी नबी से गुफ़्तगू करना, सिदरतुल मुन्तहा से ऊपर जाना, जन्नत व दोज़ख़ का नज़ारा करना, फिर अल्लाह तआला से राज़ व नियाज़ की बातें करना, पचास वक़्त की नमाज़ को हज़रत मूसा अलै0 के मशविरे पर बार–बार दरबारे इलाही में जाना और कम करवाना, यहां तक कि पाँच वक़्त की नमाज़ रह गई, यह सारा काम बस रात भर में हो गया, बल्कि रात में किसी वक़्त रवानगी हुई थी और फज्र से क़ब्ल वापसी हो गई, यह एक अज़ीम मोजिज़ा था जिसे मेराज कहा जाता है।

हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजिज़ात बे हिसाब हैं, आप की तो हर बात मोजिज़ा थी, पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खजूर के एक तने को मिम्बर बनाये हुए थे, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए नया मिम्बर तैयार किया गया और उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जलवा अफ़रोज़ हुए तो खजूर वाला मिम्बर जो पास ही था जुदाई के ग़म में ज़ोर–ज़ोर से रोने लगा, सबने उसके रोने की आवाज़ सुनी, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर से उतर कर उस के पास गये और उस पर हाथ रखा तो सिस्कियां लेता हुआ चुप हो गया। लकड़ी से इन्सानों की तरह रोने की आवाज़ आना यह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिज़ा था, इस मोजिज़े को उसतुने हन्नाना कहते हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कंकरियों को इशारा दिया तो वह कलमा पढ़ने लगीं, एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चाँद को उंगली से इशारा किया तो उसके दो टुकड़े अलग–अलग हो गये, जिसे वक़्त के मौजूद सब लोगों ने देखा, फिर चाँद मिल गया, कभी पत्थर से आवाज़ आई, ''अस्सलामु अलैकुम या रसूलुल्लाह'' कभी दरख़्त से आवाज़ आई ''अस्सलामु अलैकुम या रसूलुल्लाह'' यह सब हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजिज़ात हैं, जिनको देख कर ईमान वालों में मज़बूती आई, नेक रूहें ईमान लाईं, लेकिन बद रूहें कुफ्र में मुबतिला रहीं।

एक बार 14 या 15 सौ सहाबा रज़ि0 के साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उमरा की नियत से निकले, हुदैबिया के मैदान में पहुँचे थे कि कुरैश मक्का ने जो अभी ईमान न लाए थे, रुकावट डाली, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे गुफ़्तगू की और सुलह–सफाई फ़रमाई, जिसमें तै पाया कि इस साल लौट जाएं, आइन्दा आकर उमरा करें, वहां खुदा की मस्लिहत कि पानी ख़त्म हो गया, 15 सौ सहाबा रज़ि0 प्यासे भी थे और उनको वुज़ू भी करना था, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लोटे में थोड़ा पानी था, आप को इत्तिला की गई कि पानी नहीं है, और पानी की सख़्त ज़रूरत है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लोटे में जो पानी है बस इतना ही पानी है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोटे में हाथ डाला, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उन्गलियों से चश्मा उबल पड़ा, और लोग पानी लेने लगे, यहाँ तक कि 15 सौ लोगों ने पिया और वुज़ू किया, यह भी हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिज़ा था, जिसे सहाबा किराम रज़ि0 ने अपनी आँखों से देखा। अल्लाह की रहमत व सलामती हो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

एक बार जब मालूम हुआ कि मक्का वाले बड़ी तादाद के साथ मदीना तय्यबा पर हमला करने वाले हैं तो यहां जंगी मसलिहत से तै पाया कि मदीना तय्यबा के एक जानिब खन्दक खोदी जाए ताकि दुश्मन आसानी

से मदीना तय्यबा में दाख़िल न हो सकें, खन्दक की खुदाई चल रही थी, सारे सहाबा और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी भूके थे, हज़रत जाबिर रज़ि0 के घर में एक साअ़ यानी तकरीबन साढ़े तीन किलो आटा था, उन्होंने सालन के लिए एक बकरी का बच्चा ज़बह कर लिया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दावत दी, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आम ऐलान कर दिया कि सब लोगों की जाबिर रज़ि0 के घर दावत है, जाबिर रज़ि0 सुन कर घबरा गए, बीवी को मालूम हुआ तो उन्होंने ढारस बंधाई कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दावत का ऐलान किया तो हम लोगों को क्या फिक्र है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जाबिर रज़ि0 के घर जाकर सालन और आटे में अपना लुआबे दहेन मिलाया और दुआ की, जिससे इतनी बरकत हुई कि एक हज़ार सहाबा रज़ि0 ने पेट भर कर खा लिया और खाना उसी तरह मौजूद था, यह हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिज़ा था। रब्बि सल्लि व सल्लिम अला रसूलिकल करीम अला आलिही व आस्हाबिही अजमईन।

एक मोजिज़ा और समाअ़त फरमाएं– एक बार असहाबे सुफ़्फ़ा भूके थे, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर थे, वह भी भूके थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरयाफ़्त फरमाया कि घर में कुछ खाने को है? एक प्याला दूध का पेश किया गया कि बस यही है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा से फरमाया कि असहाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाओ, असहाबे सुफ़्फ़ा आ गये, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 को हुक्म दिया कि एक–एक कर के सब को दूध पिलाओ, सब ने दूध पिया और हर एक शिकम सैर हो गया, लेकिन दूध प्याले में कम न हुआ, हुक्म हुआ अबू हुरैरा पियो। हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 ने पिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया और पियो, और पिया, फरमाया और पियो, अर्ज़ किया पेट भर गया। बाकी दूध हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नोश फरमाया। यह भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मोजिज़ा था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बे शुमार मोजिज़े हैं, उनमें से बहुत से हदीस की किताबों में लिखे हैं, उनका एहाता दुश्वार है, सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व असहाबिही व सल्लिम।

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो पैगाम उम्मत को पहुंचाने के लिए अल्लाह तआला की तरफ से दिया गया था वह पूरा–पूरा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत को पहुंचा दिया आखिरी हज में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ि0 से पूछा कि हमने तुम को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचा दिया? सहाबा रज़ि0 ने एक ज़बान हो कर कहा था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहुंचा दिया और दीन की जो अमानत आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत को पहुंचा दी। हम को यह अन्दाजा तो होता था कि इस सारी मखलूक का कोई ख़ालिक़ है, लेकिन यह न जानते थे कि उसकी ज़ात व सिफ़ात के बारे में हमको क्या मानना चाहिए, यह सब कुछ हमको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते ही से मालूम हुआ, हम इस एहसान का बदला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दे सकते हैं? हरगिज़ नहीं! बस हम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत करें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजते रहें, यही हमारी जानिब से आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम के एहसानों का शुकराना है सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व असहाबिही व सल्लिम।

बुज़र्गो, भाइयो, माओ और बहनो! हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया कि इबादत के लायक सिर्फ़ अल्लाह है और कोई नहीं और अपने को बताया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह तालीम दी और तौहीद को इस तरह दिल में बिठाया कि अगर हमारे सामने दौलत का ढेर रख दिया जाए और कहा जाए की शिर्क करो तो यह दौलत तुम्हारी। उस वक़्त हम दौलत पर लात मार कर तौहीद पर काएम रहेंगे, हमारे सर पर अगर तलवार रख कर, हमारे सीने पर बन्दूक लगा कर शिर्क का मुतालबा किया जाए तो हम जान की परवाह न करेंगे और तौहीद पर क़ाएम रहेंगे।

अगर हमको शिर्क न करने पर आग में डालने की धमकी दी जाए तब भी हम तौहीद पर काएम रहेंगे, इसलिए कि यह सब तकलीफ़ें वक़्ती होंगी, लेकिन शिर्क करने की सज़ा अल्लाह की नाराजगी के साथ हमेशा हमेश का जहन्नम है, लिहाजा यह वक्ती तकलीफ़ बरदाश्त कर ली जाए और हमेशा के जहन्नम से बचा जाए, रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतंव व फिल आखिरती हसनतंव व क़िना अज़ाबन नार।

बड़े रंज व अफ़सोस की बात है कि उम्मत में बड़ी तअदाद ऐसे लोगों की पाई जाती है जो रोज़ा नहीं रखते, नमाज़ नहीं पढ़ते, माल है मगर ज़कात अदा नहीं करते, हज फर्ज़ है मगर हज अदा नहीं करते, शैतान ने उनको ऐसी पट्टी पढ़ाई है कि वह इस हाल में भी अपने को अल्लाह का महबूब समझते हैं, ऐसे लोग गुमराह हैं, अल्लाह उनसे नाराज़ होता है, अल्लाह उनको हिदायत दे, और हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते पर चलाए।

भाइयो और बहनो! जो इबादतें हम पर फर्ज़ हैं हम उनको अदा करें, जैसे पंज वक्ता नमाज़, रमज़ान के रोज़े, माल हो तो ज़कात और हज करने भर का माल हो तो हज करें, ग़मी और खुशी में अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा अपनाएं, लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 की शादी और रुख़्सती के वक़्त ख़ुशी का मौक़ा और हज़रत इब्राहीम, हज़रत ताहिर रज़ि0 और दूसरे साहबज़ादों की पैदाइश का मौक़ा रहा हो, उन मौक़ों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्या किया? हम को चाहिए कि हम ख़ुशी के मौक़े पर अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भूल कर गुनाहों के ज़रिए ख़ुशी न मनाएं।

इसी तरह ग़ौर करें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महबूब चचा हज़रत हमजा रज़ि0 शहीद हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साहबजादेगान की वफ़ात हुई, बदर में सहाबा रज़ि0 शहीद हुए, उहूद में सहाबा रज़ि0 शहीद हुए, बिरे मऊना में उनहत्तर सहाबियों को धोके से शहीद कर दिया गया, हर-हर मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सख़्त गम हुआ, बिरे मऊना के शहीदों से इतना मुतअस्सिर हुए कि महीना भर नमाज़ में क़ातिलों को बददुआ देते रहे, लेकिन ग़म की कोई तक़रीब न मनाई, न नौहा मातम अपनाया, न ताज़िया न अलम उठाया, लिहाजा हम हर मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इत्तिबा करें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने साफ़ फ़रमा दिया है कि जो मेरे तरीके से मुँह फेरे वह मुझ से अलग है, मुझ से उसका कोई वास्ता नहीं, सल्लल्लाहु अलैहि व अला आलिही व असहाबिही वसल्लिम। ❑❑

पवित्र कुर्आन और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हमारा सम्बन्ध कैसा हो?

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी —अनु0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

पवित्र कुर्आन में सब कुछ है-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 ने एक अवसर पर कहा था कि इसमें सब कुछ है लेकिन लोगों की अक्लें वहां तक नहीं पहुंच सकतीं। इसलिए हज़रत अली रज़ि0 ने एक अवसर पर कहा था कि जब लोगों ने उनके बारे में इधर–उधर के ख्यालात पेश किये थे तो हज़रत अली रज़ि0 ने कहा था कि मेरे पास कुछ नहीं है, हां कुर्आन की समझ अल्लाह ने दी है। ये कुर्आन की समझ मामूली बात नहीं है। कुर्आन बिजली के करंट की तरह है। ये आपने देखा होगा कि तार लगा हुआ करंट उसके अन्दर है। इस तार को मैं छू रहा हूं लेकिन यदि यहां से कटा हो और आप हाथ लगाऐं तो अभी आप या तो उसी के अन्दर सिमट जाएंगे या उठाकर फेंक दिये जाएंगे। तो अस्ल में हम लोग कुर्आन को अल्फाज़ के तार में पढ़ लेते हैं, ये अल्फाज़ का तार है, उसके अन्दर करंट है और ऐसा जबरदस्त करंट है कि जिसमें लगा दिया जाता है, वह चीज़ चलने लगती है। इस लाउडस्पीकर में जैसे ही करंट लगाया गया उसकी आवाज़ कई गुनी बढ़ गई। यदि इस करंट को रेफ्रीज़रेटर से जोड़ दिया जाए तो फ्रीज़ ठण्डा करने लगता है और हीटर में जोड़ दिया जाए तो हीटर गरम होने लगता है और लाइट में जोड़ दिया जाए तो रौशनी करने लगता है। इसे कहीं भी लगा दीजिए, उसके अन्दर ताक़त पैदा हो जाती है, एनर्जी पैदा हो जाती है और असाधारण क्षमता पैदा हो जाती है।

ऐसे ही कुर्आन का जब करंट आता है तो उसके अन्दर बात ही कुछ और होती है। हम लोग अस्ल में सिर्फ देखने में और तार को छू लेने में समझते हैं कि इसमें कुछ नहीं है, ऊपर के तार से बच्चा भी छू लेता है, बड़े भी छू लेते हैं, बूढ़े भी छू लेते हैं लेकिन जब रेज़र से काट दीजिए और उसके बाद कहिए हाथ लगा दो। अभी वहां जाकर गिरेगा। इसीलिए कुर्आन के बारे में कहा गया है कि वह उठाता है और बहुत ऊपर ले जाता है, लेकिन उठा कर पटक भी देता है। इसलिए तार जोड़ने के लिए मैकेनिक की आवश्यकता पड़ती है, ये नहीं कि कोई अनाड़ी आए और तार जोड़ने लगे, उल्टा–सीधा, तो ऐसा करंट मारेगा कि वहां जा के उल्टा पड़ा होगा, मौत हो जाएगी और यदि समझदार है तो बात ही कुछ और है।

इसीलिए अल्लाह जब किसी बन्दे को कुर्आन अता करता है तो उसका तार जोड़ा जाता है और इन बच्चों का भी तार जोड़ा गया है लेकिन इनमें करंट नहीं आया है। यदि करंट आता तो प्रथम श्रेणी ये होती कि टख्नों से ऊपर पायजामा होता और दाढ़ी ठीक होती और लिबास भी सही होता, सुन्नत के मुताबिक़ होता। लेकिन अभी कुछ नहीं हुआ। अभी केवल तार जोड़ा गया है लेकिन अभी करंट नहीं दौडाया गया है। जब करंट आएगा तो करंट का पहला दरजा ये है कि सुन्नत के मुताबिक चेहरा हो जाएगा। सुन्नत के मुताबिक लिबास हो जाएगा। सुन्नत के मुताबिक चाल–ढाल हो जाएगी। ये पहला दरजा है और अधिकतर हममें से पहले से आगे नहीं बढ़ पाते।

पहले दरजे से आगे बढ़ने वाले बहुत कम हैं। पूरे भारत में दो–चार आदमी हैं जो उससे आगे बढ़े हैं और जब उससे आगे आदमी बढ़ जाता है तो मालूम है क्या होता है? उसको कहते हैं कुर्आन वाला आदमी। जैसे हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के बारे में हज़रत आइशा रज़ि0 से पूछा गया था कि अल्लाह के रसूल का व्यवहार कैसा है? तो हज़रत आइशा रज़ि0 ने कहा था कि क्या तुम कुर्आन नहीं पढ़ते । आप चलता–फिरता कुर्आन हैं। एक तो पढ़ता हुआ कुर्आन वह है जो तुम पढ़ रहे हो और चलता–फिरता कुर्आन मुहम्मद सल्ल0 हैं। तो आप कुर्आन वाले हैं। जब आदमी कुर्आन वाला है तो मालूम है क्या होता है? अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 आराम फरमा रहे हैं, सो रहे हैं, बबूल कें पेड़ पर आपकी तलवार लटकी हुई है, सहसा एक दुश्मन आता है और आपकी तलवार उठाता है और कहता है, ऐ मुहम्मद! बताओ अब तुम्हें कौन बचाएगा? लेकिन उस बेचारे को मालूम नहीं कि कुर्आन वाले हें। इस पर प्यारे नबी सल्ल0 ने कहाः अल्लाह बचाएगा। इतना कहना था कि तलवार उसके हाथ से गिर गई। अब आप सल्ल0 ने तलवार उठा ली और कहा कि अब तुम बताओ तुम्हें कौन बचाएगा? तो बेचारा खुशामद करने लगा कि आप तो बड़े अच्छे हैं, बहुत रहम करने वाले हैं, बड़े दयालू हैं। इसलिए जब कुर्आन आना शुरु होता है तो उसके अन्दर असाधारण योग्यता जन्म ले लेती है।

शैख अजुद्दीन का वाक्या– एक हमारे बुजुर्ग गुज़रे है, शैख अजुद्दीन बिन सलाम, बहुत बड़े अल्लाह वाले। उनके साथ एक विचित्र घटना घटी। क्योंकि वह भी कुर्आनी आदमी थे। कुर्आन से उनका सम्बन्ध बहुत गहरा था। इस पर उन्होंने किताबें भी लिखी हैं। वह मिस्र गए और उन्हें वहां शैखुल इस्लाम बनाया गया। मिस्र का मानो सबसे बड़ा पद उनको दिया गया। वह वहां रहने लगे। लेकन कुछ दिनों बाद उन्होंने फतवा दिया कि मिस्र में जो बादशाह है और जो वज़ीर है, ये सब नाजायज़ हैं। आसान नहीं है ये फतवा देना। शासन के मामूली से मामूली मंत्री के पीछे लोग घूमते हैं। आप यहीं देख लीजिए यदि कोई ओहदेदार है तो उसकी प्रसंशा करते नहीं थकते। और उसके पीछे–पीछे घूमते हैं, जैसे जानवर घूमता है। ये स्थिति हो गई है यहाँ। वह कहते हैं कि तुम्हारी हुकूमत नाजायज़ है तो ज़ाहिर है कि बादशाह को गुस्सा आया और आना भी चाहिए था और वज़ीरों को भी गुस्सा आया। बादशाह और वज़ीर ने कहा कि इस मौलवी की गर्दन मारो, वरना परेशान करता रहेगा, इसलिए उसको ठीक करना है वरना ये मानेगा नहीं। तो जाहिर है उन्होंने षडयंत्र रचा। लम्बा किस्सा है। अंत में हुआ ये कि बादशाह वज़ीर और सेना के साथ उनके घर पर आया कि आज सब मिलकर तलवार से उनको मार देंगे और जब सब मिलकर मारेंगे तो पता भी नहीं चलेगा कि किसने मारा है। इस प्रकार समस्या का समाधान हो जाएगा। कोई तूफान खड़ा नहीं होगा। वह लोग षडयंत्र रचकर आए। उनका दरवाज़ा खटखटाया। बेटा निकला। बेटे ने देखा कि तलवारें लिए हुए लोग हैं। समझ गए। अपने पिता से जा कर कहा अब्बा जान! सेना के लोग तलवार लेकर आए हैं, मामला संगीन है। उनके बाप ने कहा कि बेटा! तुम्हारे अब्बा के साथ अल्लाह ने कहां शहादत लिखी है और ये कहकर बाहर निकले और समस्त सेना और वज़ीर से कहा कि भाई! आप लोग कैसे आए? तुरन्त

फौज की तलवारें गिर गईं और उन्होंने कहा कि हज़रत! आप क्या चाहते हैं? कहने लगे कि तुम सबको बेचूंगा नख्खास ले जाकर। ऐसा कहीं आपने नहीं पढ़ा होगा कि बादशाह और वज़ीर को नख्खास में बेचा गया? उन लोगों ने कहा हज़रत! हमें बेचेगा कौन? कहा, मैं बेचूंगा। और हज़रत सबको नख्खास ले गए और बोली लगाई कि उनको कौन खरीदेगा? और फिर उसके बाद उनको बेच दिया। उनको बेचने के बाद फिर उन्हें खरीदा और खरीदने के बाद उनको आज़ाद कर दिया। आज़ाद करने के बाद उनको बादशाह दोबारा बनाया और कहा कि अब तुम सही हो, तुम्हारी बादशाहत सही है।

कहना ये है कि कुर्आन का करंट अन्दर आता है तो ये इन्सान जो देखने में मामूली इन्सान है अर्थात हम और आप एक प्रकार के हैं, अल्लाह वाले भी हमारी ही तरह होते हैं। उनकी नाक पीछे नहीं होती। आखें भी पीछे नहीं होती। आखें भी ऐसी होती हैं उनकी। ज़बान भी ऐसी ही होती है। लेकिन जिस तरह मैंने अर्ज़ किया कि लाउडस्पीकर ऐसे ही रखा हुआ हो, करंट न जोड़ा गया हो तो उस लाउडस्पीकर की कोई हैसियत नहीं है। ठन–ठन करेगा लेकिन जोड़ने के बाद उसके अन्दर ताक़त पैदा हो गई कि दूर तक आवाज़ पहुंच रही है। ऐसे ही जब अल्लाह के किसी बन्दे में कुर्आन का करंट आता है तो आखें उसकी बदल दी जाती हैं। दिमाग़ बदल जाता है और उसके कान बदल जाते हैं। उसके हाथ–पैर बदल जाते हैं। उसके अन्दर ऐसा सम्बोधन विराजमान हो जाता है, उसके अन्दर ऐसी शक्ति आ जाती है कि बड़े–बड़े लोग उसके सामने आते हुए घबराते हैं। वह अकेले सबके लिए काफी होता है और समस्याओं का समाधान कर देता है। पेचीदगियों को ख़त्म कर देता है। परेशानियों को खत्म कर देता है, उलझनों से लोगों को निकाल कर सही मार्गदर्शन करता है। उसके लिए ये काम दो मिनट का होता है। लोग समझते हैं कि लोगों ने तो इतनी मेहनत की, लेकिन कुछ नही हुआ, और ये आया और करता चला गया। ये है पवित्र कुर्आन! हम लोगों ने अस्ल में कुर्आन को समझा ही नहीं और बस पहले ही दरजे पर एक असरे से भटके हुए हैं। और वैसे भी दूसरे– तीसरे दरजे पर पहुंचने वाले हैं कितने? जो पहुँचे उन्होंने वह कमाल दिखाए और उनके द्वारा अल्लाह ने ऐसे बड़े–बड़े काम लिए कि आज दुनिया हैरान है। अतः आज जो ये कुर्आन हम लोग पढ़ते हैं, इस सम्बन्ध में ये प्रयास करें कि हमारा इससे सम्बन्ध जुड़ जाए। देखिए! एक बात मैं कहता हूं कि इस समय स्थिति बड़ी संवेदनशील है। हम लोग अपने घर में आकर रोटी खा लेते हैं और बैठ जाते हैं, और समझते हैं कि सब ठीक है। शतुरमुर्ग की तरह हम लोगों का हाल हो गया है कि जब शिकारी शिकार करने आते हैं तो वह अपना सर रेत के अन्दर डाल देता है और समझता है कि मैं सुरक्षित हो गया और शिकारी बहुत आसानी से उसका शिकार कर लेते हैं। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें.....

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 कहते हैं कि मैं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! ऐसे व्यक्ति के बारे में आप क्या कहते हैं जिसने लोगों से मुहब्बत की, लेकिन उनके मर्तबा (बराबर) का नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा, मोमिन जिसको चाहता है उसी के साथ होगा। (मुस्लिम) ❑❑

भ्रष्टाचार–उन्मूलन कैसे?

भ्रष्टाचार पर इस समय पूरे देश में चर्चा हो रही है। पहले भी होती रही थी और भविष्य में भी होती रहेगी। पिछले महीनों में 2जी स्पेक्ट्रम और कॉमन वेल्थ गेम्स के आयोजन में हुए घोटालों की विशेष रूप से चर्चा रही। तीव्रता उस समय आयी जब कई बड़ी शख़्सियतें सलाख़ों के पीछे चली गयीं। इसी बीच एक विश्व स्तरीय विश्लेषण संस्था ने भारतवर्ष को दुनिया के भ्रष्टतम देशों की सूची में चौथा स्थान दिया। देश के प्रसिद्ध समाजसेवी अन्ना हज़ारे जी के अनशन से जगी जन–चेतना के बावजूद भ्रष्टाचार का सैलाब गांव से लेकर पार्लियामेंट तक जारी है। ऐसी ख़बरें नहीं आ रही हैं कि रिश्वतख़ोरी और भ्रष्टाचार में कमी आ गयी हो।

ऐसा क्यों न हो? गांव का ग़रीब और फटेहाल व्यक्ति जब पंचायत का चुनाव जीत कर प्रधान या सरपंच बनते ही रातों रात पंयायत फंड के लाखों रूपये अपनी मर्ज़ी से ख़र्च करने का अधिकार पा जाता है और कोई आस्था या क़ानून उसके मार्ग का रोड़ा नहीं बन पाता तो आसमान से अचानक टपके हुए इस ख़ज़ाने के एक बड़े हिस्से को वह अपने आप पर और अपने सगे–सम्बन्धियों पर ख़र्च करने से क्यों बचे?

इसी तरह जब एक प्रदेश या केन्द्र के मंत्री की क़लम की नोंक पर करोड़ों नहीं, बल्कि अरबों रूपये नृत्य करते हों तो उनमें से अपना माकूल हिस्सा (उचित भाग) निकाल कर अपनी कई पीढ़ियों तक की व्यवस्था क्यों न कर ले? उसको पता है कि बड़ी ख़ूबसूरती से किये गये इस काम की पहले तो किसी को कानों–कान भनक तक नहीं लगेगी और कुछ हुआ भी तो कुछ समाचार पत्रों में प्रकाशित होने और सरसरी छानबीन के बाद मामला स्वयं ही ठंडे बस्ते में चला जाएगा। इतने बड़े देश में बहुत तेज़ी से लगातार सामने आने वाले भ्रष्टाचार की अनेक घटनाओं में उसकी घटना किसको याद रहेगी। कुछ दिनों के लिए मंत्रिमंडल में शामिल होने से उसको कौन रोक सकेगा?

मान लीजिए कि भाग्य ने थोड़ी देर साथ न दिया और कुछ महीने जेल में ही गुज़र गये तो उससे क्या होता है? रिहाई के बाद उसको फूल की माला पहनाकर सर पर बिठाने वाले समर्थकों की कब कमी होती है? और सबसे बड़ी बात यह कि अपनी चतुराई से जो रूपये उसने जमा कर लिये हैं उन्हें सरकार या अदालत उनसे थोड़े ही ले पाएगी?

पंचायत से पार्लियामेंट तक का उल्लेख तो बस नमूने के तौर पर किया गया है। वर्ना सच्चाई तो यह है जीवन का कोई विभाग ऐसा मिलना असंभव सा है जहां भ्रष्टाचार और लूट–खसोट न हो। गांव के सरपंच से लेकर केन्द्रीय मंत्री तक, चपरासी से लेकर उच्च अधिकारी तक, आटो रिक्शा वाले से लेकर हवाई जहाज़ के पायलटों तक, बस कंडक्टर से लेकर रेलवे के टी0टी0 तक, दूध और घी के व्यापारी से लेकर दवा बेचने और दवा बनाने वालों तक, देश की सीमाओं और हवाई अड्डों पर तैनात कस्टम

अधिकारियों से लेकर देश की सीमा की सुरक्षा करने वाले सैनिकों तक, भ्रष्टाचार से कौन कितना पाक है यह कहना कठिन है। यह न समझा जाए कि इस सूची में जिन अनगिनत कामों, पेशों और विभागों के नाम दर्ज नहीं किये गये हैं वे सब बड़े पाकबाज़ और अत्यधिक ईमानदार हैं।

लेकिन अस्ली सवाल यह है कि यह देश भ्रष्टाचार के दलदल में आया क्यों? भौतिकवादी व्यवस्था ने सारी दुनिया को अपने पंजे में जकड़ लिया है। दुनिया में जीने वाला हर इन्सान आज भोगवादी जीवन का गुलाम बन चुका है। समाज की चमक–दमक, सुविधाएं, मनोरंजन और मस्ती प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य बन गया है। जब किसी व्यक्ति की आय उसकी इच्छाओं और अभिलाषाओं की पूर्ति नहीं करती तो वह समाज में अपनी साख बनाने के लिए आमदनी के अन्य स्रोतों की ओर ध्यान देता है और फिर वह अपनी और अपने परिवार की "ज़रूरतों" को पूरा करने के लिए जायज़–नाजायज़ में अन्तर नहीं करता हैं रिश्वत, भ्रष्टाचार, घपले, घोटाले आदि अब बुराई नहीं समझे जाते, बल्कि इन्हें वर्तमान समय की आवश्यकता का नाम दिया गया है, जो हर दृष्टि से अनुचित और ग़लत है। व्यक्तिगत रूप से ज़रूरतमंदों की सुनवाई हो या सामूहिक तौर पर किसी प्रोजेक्ट की मंजूरी या ठेके की अनुमति, अपराधियों की पर्दापोशी या दोषियों की रिहाई, इन सब नामों में भ्रष्टाचार अनिवार्य हो गया है, जिसमें दफ्तर के चपरासी से लेकर मंत्री तक लिप्त हैं।

घपले और घोटाले रिश्वत का बड़ा रूप हैं, जिसमें अधिक लोग लिप्त होते हैं और मामला भी बड़ी धनराशि का होता है। रिश्वत और भ्रष्टाचार का हाल आज यह है कि कोई भी इससे बचकर नहीं रह सकता। बच्चे के जन्म और पिता की मृत्यु का प्रमाण पत्र भी आज बिना रिश्वत के नहीं मिल सकता। घोटाले और भ्रष्टाचार का प्रदर्शन इससे अधिक और क्या हो सकता है कि एक ग़रीब राज्य का मुख्यमंत्री भी एक वर्ष में जनता के ख़ज़ाने से दस हज़ार करोड़ रूपये उड़ा लेता है और एक विभाग का मंत्री जनता की कमाई के एक लाख 76 हज़ार करोड़ रूपये हड़प कर जाता है।

ऐसा नहीं है कि देश के क़ानून निर्माताओं ने इस ओर से आंखें मूंद ली हों, बल्कि एंटी क्रप्शन ब्यूरो, इन्फोर्समेंट डायरेक्ट्रेट और सी0बी0 आई0 जैसी कई संस्थाएं और संगठन हैं, लेकिन सब बेकार बल्कि इन संस्थाओं और संगठनों में भी भ्रष्टाचार के होने से इन्कार नहीं किया जा सकता। अन्ना हज़ारे को अन्य शरीफ़ लोगों की तरह इन घपलों और घोटालों से काफ़ी दुख हुआ और उन्होंने भ्रष्टाचार के विरुद्ध सरकार को भी क़दम उठाने पर मजबूर कर दिया, लेकिन सवाल यह है कि अगर अन्ना हज़ारे जी का सुझाया हुआ जनलोकपाल बिल बन भी जाता है तो क्या रिश्वत और भ्रष्टाचार समाप्त हो सकेगा?

जिस समाज और देश में बुराई को बुराई नहीं समझा जाता हो, जनता की सम्पत्ति को अमानत (धरोहर) नहीं समझा जाता हो, जहां जवाबदेही और अपना जायज़ा लेने का काम नहीं होता, जहां क़ानून को लागू करने वाली एजेंसियां अपने काम के प्रति ईमानदार नहीं हैं, क्या वहां भ्रष्टाचार को रोका जा सकता है?

यह हमारे देशवासियों का दुर्भाग्य है कि जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न विचारों और नियमों का सहारा लिया, लेकिन पालनहार के बनाए हुए क़ानून की ओर से मुंह फेर लिया। आइए देखते हैं कि सृष्टि के रचयिता और पालनहार ने भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए क्या मार्गदर्शन किया है–

1. इस्लाम ने धन–सम्पत्ति के लालच को इन्सानों के दिलों से निकाला और आवश्यकता से अधिक धन संग्रह की हवस व लालच को अनुचित बताया। कुरआन की सूरह अत–तकासुर में है– तुम लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा और एक–दूसरे से बढ़कर दुनिया प्राप्त करने की धुन ने धोखे में डाल रखा है।

2. इस्लाम ने संतोष की शिक्षा दी है और अपव्यय और दिखावे से बचने को कहा है। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने कहा 'मालदारी धन–संपत्ति की अधिकता का नाम नहीं है, बल्कि वास्तविक मालदारी संतोष है।

3. इस्लाम अमानत और ईमानदारी पर बहुत ज़ोर देता है और कहता है जिसको भी संसार में कोई सत्ता या कोई पद मिला हुआ है उसे हर हाल में क़ियामत में उसके प्रति उत्तरदायी ठहराया जाएगा। ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फ़रमाया तुम लोगों में से जिसको भी हम किसी काम का ज़िम्मेदार बनाएं फिर वह एक सूई या उससे भी छोटी कोई चीज़ हमसे छिपाये तो यह बेईमानी होगी और क़ियामत के दिन वह उसे ज़रूर लेकर आएगा (इसकी सज़ा पाएगा) और जिस किसी को हम किसी काम पर लगाएं तो अपनी निर्धारित आय के अलावा जो कुछ भी वह किसी भी रूप में लेगा वह बेईमानी होगी।

4. इस्लाम रिश्वतख़ोरों, भ्रष्टाचारियों और घोटालेबाज़ों को यह सूचना देता है कि प्रलय के दिन उनका अंजाम दुखद होगा। ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने फ़रमाया रिश्वत लेने और देने वाला दोनों नरक में जाएंगे।

ये चार ऐसे बुनियादी उसूल हैं कि अगर इनका सच्चे दिल से पालन किया जाए तो समाज और देश से भ्रष्टाचार का अंत हो जाएगा। दुनिया में कोई क़ानून या कोई विचार ऐसा नहीं है जो इन्सान की अंतरात्मा को संबोधित करता हो। विशेष रूप से ऐसे समय में जब हमारे देश के क़ानूनविद् किसी क़ानून के बनने से पहले ही उस क़ानून से बचने के उपाय निकाल लेते हैं।

अन्ना हज़ारे जी इसके लिए यक़ीनन मुबारकबाद के योग्य हैं कि वे भ्रष्टाचार पर बेचैन हो उठे और उसकी समाप्ति के लिए जान की बाज़ी लगा दी। भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए इस ओर ध्यान देना चाहिए कि मनुष्य के अन्तर को कैसे बदला जाए? कैसे लोगों को अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ पर चलने के लए तैयार किया जाए? लोगों में भलाई और बुराई, सत्य और असत्य में अन्तर करने की शक्ति कैसे उत्पन्न की जाए और इन्सान को अन्दर से इस प्रकार बदल दिया जाए कि वह अपने रचयिता और स्वामी की मर्ज़ी का पाबन्द हो जाए और संसार का लालच भी उसे अपने स्रष्टा व पालनहार के आज्ञापालन से रोक न सके। उसके अन्दर यह ईश भय पैदा हो जाए कि अगर वह बुरे कर्म और दुष्कर्मों में लिप्त होगा तो उसे कड़ा दण्ड मिलेगा और अगर वह सुकर्म करेगा तो ईश्वर द्वारा पुरस्कार और पारितोषिक का पात्र होगा।

इतिहास साक्षी है कि ऐसे लोग भी गुज़रे हैं, जिनकी ज़िन्दगियां हमारे सामने हों तो आशा की जा सकती है कि हमारी आत्माओं तक में बसेरा किये हुए अंधेरे दूर हो सकते हैं और हम भ्रष्टाचार की इस अंधेरी खाई से सच्चाई और ईमानदारी के नूर से उज्जवल शाहराह (राजपथ) पर आ सकते हैं।

मदीना की गलियां थीं, अंधेरी रात थी, हर ओर सन्नाटा छाया हुआ था। सुबह होने ही वाली थी, घर के अन्दर से किसी माँ की आवाज़ आ रही थी, "बेटी, उठ जा, उठ जा, सुबह हो रही है। उठ, जा दूध में पानी मिला दे!"

बेटी ने कहा, "अम्मी यह तो गुनाह है, इस्लामी शासक हज़रत उमर रज़ि0 ने यह घोषणा करा दी है कि दूध में कोई मिलावट नहीं की जाएगी।"

माँ ने कुछ ऊँचे स्वर में कहा, "यहां कहां हैं हज़रत उमर रज़ि0? उठ जा दूध में पानी मिला दे।"

बेटी ने अदब से कहा, "नहीं मां, हज़रत उमर रज़ि0 न सही, अल्लाह तो मौजूद है। हज़रत उमर रज़ि0 न देखें, वह तो देख रहा है।"

अनुमान लगाया जा सकता है कि इस बातचीत के बाद भी क्या मां ने दूध में पानी मिलाने पर ज़ोर दिया होगा और रात के सन्नाटे में भी खुदा को अपने घर में मौजूद होने का विश्वास रखने वाली बेटी ने क्या दूध में पानी मिला दिया होगा?

नहीं, कदापि नहीं, इतिहास बताता है कि ऐसा नहीं हुआ, बल्कि इसके साथ यह दिलचस्प घटना घटी कि अपनी जनता के दुख–सुख को जानने के उद्देश्य से मदीना की गलियों में गश्त लगाने वाले हज़रत उमर रज़ि0 खुद ही गली में खड़े हुए मां–बेटी की यह बातचीत सुन रहे थे। आप मासूम बच्ची की ईमानी भावना और पाक चरित्र से इतने प्रभावित हुए कि उस लड़की को अपनी बहू बना लिया।

यही इस्लामी शासक हज़रत उमर रज़ि0 मदीना की मस्जिदे नबवी में मुसलमानों को संबोधित कर रहे थे। मजमें से एक साहब उठे और कहा, "हम आपकी बात नहीं सुनेंगे, जब तक आप यह न बताएंगे कि आपने यह लंबा कुर्ता कैसे सिलवा लिया?" अर्थात् राजकोष से तो हरेक मुसलमान को केवल एक–एक चादर बांटी गई थी, एक ही चादर आपको भी मिली थी और एक चादर में आप जैसे लंबे–चौड़े व्यक्ति के लिए कुर्ता तैयार होना संभव नहीं है।

हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया "इस आपत्ति का जवाब मेरे बेटे अब्दुल्लाह देंगे।"

बेटे ने खड़े हो कर स्पष्टीकरण दिया कि, "राजकोष से जो चादर मेरे हिस्से में आयी थी वह मैंने अपने पिता को दे दी थी। (इस तरह से दो चादरें मिलाकर हज़रत उमर रज़ि0 का कुर्ता तैयार हुआ था) आपत्ति करने वाले व्यक्ति ने संतुष्ट होकर कहा कि "ठीक है। अब हम आपका संबोधन सुनेंगे।"

उन्हीं हज़रत उमर रज़ि0 की अगली नस्लों के एक सपूत हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ भी इस्लामी शासक हुए तो दिल की दुनिया और ज़िन्दगी की कैफ़ियत बदल गयी। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ सरकारी काम में व्यस्त थे कि सरकारी ख़ज़ाना की अमानत के तौर पर रखे हुए सेब के ढेर में से उनके छोटे से मासूम बेटे ने एक सेब उठा लिया। बाप ने बेटे के हाथ से सेब लेकर अमानत में डाल

दिया तो बच्चा रोते हुए घर चला गया।

काम समाप्त करके जब वे खुद घर पहुंचे तो पत्नी ने शिकायत की कि आपने बेटे के हाथ से सेब छीन लिया और वह ख़ाली हाथ रोते हुए वापस आ गया। इस्लामी शासक ने कहा "वह सेब सरकारी ख़ज़ाने की अमानत था। (उसकी सुरक्षा के हम ज़िम्मेदार थे) बेटे को सेब चाहिए तो अपने पैसे से बाज़ार से ला देता हूँ।"

ये छोटी–छोटी तीन ऐतिहासिक घटनाएं इस बड़ी सच्चाई की ओर इशारा कर रही हैं कि यदि अल्लाह के होने पर पूरा ईमान हो, परलोक का यक़ीन और वहां हर छोटे–बड़े अच्छे बूरे कर्मों की जवाबदेही और दण्ड व पुरस्कार का एहसास ताज़ा रहे और दुनिया की दृष्टि से भी ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह मुबारक कथन नज़र के सामने रहे कि यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी भी चोरी करती तो उसका भी हाथ काट दिया जाता, तो देश में मौजूद भ्रष्टाचार की मौजूदा स्थिति बाक़ी न रहती। जहां न ईश्वर का भय हो, न परलोक में जवाबदेही का एहसास, न दुनिया में जुर्म की सख़्त सज़ा की आशंका, वहां भ्रष्टाचार की नदियां बहने और बहाने से कैसे और किस तरह रोका जा सकता है? इसको मज़बूत आस्था और प्रभावशाली क़ानून और उसको बेलाग लागू करने से ही समाप्त किया जा सकता है।

सप्ताहिक कान्ति 11 दिसम्बर 2011 ग्रहीत

❑❑

ज़िक्रे सीरतुन्नबी सल्ल०.....

थे जो छुपे हुए दुश्मन थे और मदीने के करीब के यहूद थे जो बहुत जल्द ज़ेर हो गये। सन् 10 हिज्री में आपने पहला और वदाई हज किया। कुर्आन शरीफ 23 सालों तक उतरता रहा, जब कुर्आन मजीद पूरा हो गया और दीन कामिल हो गया तो रबीउल अव्वल की 12 तारीख सन् 11 हिज्री में अल्लाह तआला ने आपको बुला लिया। आप की वफात का दिन बड़े ग़म का दिन था, जिसे सहाब–ए–किराम ने बरदाश्त किया। 12 तारीख़ को वफात होने के सबब बहुत से अनपढ़ लोग इस रबीउल अव्वल के महीने को बारह वफात का महीना कहते हैं।

अल्लाह तआला ने आपको बेशुमार मोजिज़ात अता फरमाए थे, जिनका ज़िक्र इसी अंक में कहीं और किया जाएगा।

याद रहे कि आपके आने के बाद अब आप पर ईमान लाये बिना कोई आखिरत में नजात नहीं पा सकता, और आपसे मुहब्बत के बिना किसी का ईमान कामिल नहीं हो सकता और मुहब्बत की पहचान आपकी इताअत है, आप की सुन्नतों को अपनाना है, आपका फरमान है "जिसने मेरी सुन्नतों को पसन्द किया उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की वह जन्नत में मेरे साथ होगा। अल्ला हुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलिही व असहाबिही व बारिक वसल्लिम।

❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

लिए देखें मजमूअतुल फतावा में मौलाना अब्दुल हई फिरंगी महली का जवाब, यह जवाब मौलाना मुहम्मद कासिम की किताब तहजीरून्नास के आखिर में भी छपा हुआ है। कुछ लोग इलजाम लगाते हैं कि मौलाना मुहम्मद कासिम साहब खत्मे नुबूवत के काइल न थे, यह सरासर बुहतान है और उनकी इबारत न समझ सकने के सबब है। अल्लाह तआला हिदायत दे।

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

आबादी और बरबादी- धरती की आबादी सात अरब के पार हो गई है। यह आंकड़ा खुशी और चिंता, दोनों की वजह है। 31 अक्तूबर को पैदा हुए बच्चों की माओं या उनके वालिदों के लिए यह घड़ी बेशक खुशी की है, क्योंकि इस तारीख को दुनिया की आबादी सात अरब पहुंची। फिर भी बहुतेरे लोग इस आंकड़े को निराशा के साथ देख रहे हैं। 12 अक्तूबर, 1999 को विश्व की आबादी छह अरब हो गई थी और एक दशक से कुछ ज़्यादा वक्त में उसमें एक अरब की आबादी और जुड़ गई। इस जनसंख्या विस्फोट की कई वजहें हैं। चिकित्सा विज्ञान की तरक्की ने हमारी जीने की इच्छाशक्ति के सामने जान लेवा रोगों को बौना बनाया है। युद्ध व अकाल से अब भी लाखों लोगों पर असर पड़ता है, पर अब इसके दूरगामी कुप्रभाव न के बराबर हैं। वैसे यह सकारात्मक रुझान है। चिंता की बात यह है कि बड़ी आबादी वाले मुल्कों में विकास की रफ्तार कम हुई है। विकसित दुनिया के ज़्यादातर समाज में बढ़ती आबादी की छाया है, जबकि विकासशील मुल्कों के सामने जनसंख्या वृद्धि दर को रोकने की चुनौती है। जैसे—जैसे आबादी बढ़ेगी, संसाधनों पर नियंत्रण की होड़ भी बढ़ेगी। अब तो प्राकृतिक संसाधन भी कम बचे हैं। खनिज संपदाओं का खूब दोहन हो चुका है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से जंगल नंगे हो गए हैं। ग्लोबल वार्मिंग से आबोहवा बिगड़ी है। ऐसे में यह दलील ठीक ही है कि अगर मानव आबादी फली—फुली है तो वह दूसरे जीव—जंतुओं की कीमत पर। गरीब मुल्कों की आबादी भुखमरी, बीमारी व संसाधनों की छीना—झपटी से जूझ रही है। पाकिस्तान भी उसी में शामिल है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष का आकलन है कि यही दर बरकरार रही तो इस दशक के अंत तक पाकिस्तान की आबादी 21 करोड़ हो जाएगी। फिलहाल तो यह मुल्क अपनी 17 करोड़ 70 लाख की आबादी को भोजन, शिक्षा व रोजगार देने में असमर्थ है। ऐसे में भविष्य अंधकारमय ही है।

कश्मीर से सेना हटाए भारत- पूर्व क्रिकेटर और पाकिस्तान तहरीक—ए—इन्साफ पार्टी के प्रमुख इमरान खान ने कहा कि भारत को कश्मीर से अपनी सेना हटा लेना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जब सेना के बल पर अमेरिका अफगानिस्तान में कामयाब नहीं हो सका तो कश्मीर में भारत कैसे सफल हो सकता है। उनका मानना है कि सेना किसी देश की समस्याओं का हल निकालने में कभी भी सक्षम नहीं रही है।

पाकिस्तान में लंबे समय में अपने सियासी वजूद को मजबूत बनाने की कवायद में जुटे इमरान ने लाहौर में अपने समर्थकों की एक रैली को संबोधित करते हुए कहा, मैं हिंदुस्तान से कहना चाहता हूं कि आपने कश्मीरियों के बीच सात लाख फौज लगा रखी है मगर कोई सेना किसी देश की समस्याओं का कभी भी हल निकालने में सक्षम नहीं रही है। इमरान पाकिस्तान की सियासत में अपनी पार्टी की जड़ें मजबूत करने में लगे हैं। ❑❑